बिषयों की गंदगी में ऐसा लुभाया।
तेरा नाम मेरी जुबां पै न आया॥
गुनाहगार होकर हाजिर खड़ा हूँ।
कुछ भी तो कहने के काबिल नहीं हूँ॥ १ ॥
कृपा करके दी तुमने मुझे जिन्दगानी।
मगर तेरी महिमा कुछ भी न जानी॥
करजदार तेरा जनमजात हूँ मैं।
करजा चुकाने के काबिल नहीं हूँ॥ २ ॥
सबसे बड़े तुम हो दाता जगत के।
देते ही देते अघाते नहीं हो॥
मेरा जगत में कुछ भी नहीं है।
कुछ भी मैं देने के काबिल नहीं हूँ॥ ३ ॥
यह जान तेरी शरणमें आया।
पल भर भी मुझको कभी ना भुलाना।
सिवा आँसुओं के हे मेरे प्यारे।
कुछ भी चढ़ाने के काबिल नहीं हूँ॥ ४ ॥

* श्रीहरिः *

चेतावनीपद-संग्रह

भाग—२

(राजस्थानी बोलीमें)

श्रीगनपति-वंदना-प्रार्थना

(१)

गननायक गौरी-पुत्र गजानन देवा।
मैं विनय करूँ कर जोड़ अरज सुनि लेवा॥ टेर ॥
थाँरी जगदम्बा जग-जननी पार्वती माता।
थाँरा सब देवन का स्वामि षडानन भ्राता॥
थाँरा पिता है भोलेनाथ देवन के देवा॥ १ ॥
थाँरी ओछी पिन्डल्याँ दुन्द बड़ी अति सोहे।
थाँरो गज-मुख सुन्दर देखि देखि मन मोहे॥
थाँरे लागे मोदक भोग चढ़े अरु मेवा॥ २ ॥
थे राम-नाम की अद्‌भुत महिमा जानी।
थे ऋद्धि सिद्धि का दाता हो बड़ दानी॥
अब पार लगावो भव-सागर से खेवा॥ ३ ॥
कोई थाँ बिन मंगल काज न जगमें होवे।
जो प्रथम मनावे सिद्ध काज सब होवे॥
हरि-चरणन में निष्काम भक्ति मोहि देवा॥ ४ ॥

प्रार्थना

(२)

गिरिजा सुत प्यारा, मूसापर चढ़कर बेगा आई ज्यो।
गनदेवा थाँरी, रिध सिध नारयाँ ने साथे ल्याई ज्यो॥ टेर॥
रणत भँवर के राजा, सारो काजा, गनपति श्री महाराजा।
आकर के मोदक भोग लगाई ज्यो॥ १॥
भाल त्रिपुंड विशाला, मोतियन माला, अँगपर पीत दुशाला,
जरकस जरियन का साज सजाई ज्यो॥ २॥
कर में परसा धारो, बिघन बिडारो, कुमति निवारो प्रभुजी।
किरपा कर भगती रस बरषाई ज्यो॥ ३॥
करो आपकी मरजी, कीन्ही अरजी, गावे नाथू दरजी।
छोटी सी अरजी पेश चढ़ाई ज्यो॥ ४॥

श्रीहनुमत्-वन्दना

(३)

बालाजीरी क्याँसूं करूँ खातरी,
रामजी रा प्यारा थाँरे कमी काँई बातरी।
अँजनी रा लाला थाँरे कमी काँई बातरी॥ टेर॥
जहँ जहँ सीताराम विराजे सँगमें दरशण थाँरा हो, सँगमें०॥
गाँव शहर जंगल बस्ती में अगणित मन्दिर न्यारा हो, अग०॥
करो निरन्तर रघुवरजी री चाकरी॥ रामजी०॥ १॥
जितरा जगमें राम-भक्त है महिमा अधिक तुम्हारी हो, महिमा०॥
जैनी और सनातन धरमी, ध्यावे सब नर नारी हो, ध्यावे०॥
दूर-दूर से आवे थाँरे जातरी॥ रामजी०॥ २॥
दाल चूरमा लाडू पेड़ा श्रीफल भोग लगावे हो, श्रीफल०॥
सवामणी जो करे प्रेमसे ब्राह्मण नूत जिमावे हो, ब्राह्मण०॥
राम-भजन में जागे सारी रातरी॥ रामजी०॥ ३॥

'दास' करे बिनती कर जोड़े, अब तो मत तरसावो हो, अब०॥
सीताराम जुगल चरणन में नित नव प्रेम बढ़ावो हो, नित०॥
धरद्यो सिर पर पाँचों अँगुली हातरी॥ रामजी०॥ ४॥

अंजनी माताको पुत्रस्नेह

(४)

बालाजी ने लाड लडावे माता अँजनी॥ टेर॥
स्नान कराय वस्त्र पहिरावे,
केशर तिलक लगावे माता०॥ १॥
आओ हनुमन्ता खेलो परबत पर,
रामजी को नाम पढ़ावे माता०॥ २॥
सवा मन रोटा घिरत गाय को,
चूर के चूरमो जिमावे माता०॥ ३॥
हात झुंझुनियाँ पाँव पैंजनियाँ,
मन्दिर में नाच नचावे माता०॥ ४॥
महादेव प्रभु संकट मोचन
रामजी का भगत बनावे माता०॥ ५॥

कोटि-कोटि प्रणाम

(५)

पाये लागूँ महाराज विरद बंका।
विरद बंका हो गढ़ तोड़ी लंका॥ टेर॥
कुण थाँरी माता, कूण पिता है,
कुण थाँरो नाम धरयो है हनुमन्ता॥ १॥
अँजनी म्हारी माता पवन पिता है,
ब्रह्मा म्हारो नाम धरयो है हनुमन्ता॥ २॥
कुन्याँ जी रे सत सूं सागर उतरया,
कुन्याँ जी रे बल तोड़ी गढ़ लंका॥ ३॥

सियाजी रे सत सूं सागर उतर्‌या,
रामजी रे बल तोड़ी गढ़ लंका॥ ४ ॥
रावण मार अहिरावण मार्‌यो,
कुम्भकरण पर बाजे डंका॥ ५ ॥
'तुलसीदास' आस रघुवर की,
असुर मारकर मेटी संका॥ ६ ॥

नित्य सम्बन्ध

(६)

काईं गुणगान करूँ हरि थाँरो, थाँबिन जगमें कोई नहिं म्हारो॥ टेर॥
थे प्रभु गंगा में थाँरी मीना, थाँ बिछड़्याँ म्हारा होय नहीं जीना॥ १ ॥
थे प्रभु समँदर मैं थाँरी लहरी, थाँरी म्हारी प्रीतड़ली गहरी॥ २ ॥
थे प्रभु बादल मैं हूँ पपैयो, अपनो समझ मोहि भूल न जैयो॥ ३ ॥
थे प्रभु गैया मैं थाँरो बाछो, दौड़ उछल कर आऊँ मैं पाछो॥ ४ ॥
थे म्हारी जननी मैं थाँरो जायो, राखो सदा हिवड़े लिपटायो॥ ५ ॥

मैं आपको हूँ

(७)

मैं थाँरो थाँरो थाँरो, प्रभु थे मत मोहि बिसारो॥ टेर॥
मैं भूखो हूँ तो थाँरो, मैं प्यासो हूँ तो थाँरो।
मैं निकमू हूँ तो थाँरो, कछु काज करूँ तो थाँरो॥ १ ॥
मैं खड़्यो रहूँ तो थाँरो, मैं पड़्यो रहूँ तो थाँरो।
मैं फिकर करूँ तो थाँरो, अलमस्त रहूँ तो थाँरो॥ २ ॥
मैं रोगी हूँ तो थाँरो, रसभोगी हूँ तो थाँरो।
मैं चुप रहवूं तो थाँरो, बढ़कर बोलूं तो थाँरो॥ ३ ॥
स्विकार करो तो थाँरो, इनकार करो तो थाँरो।
ठोकर मारो तो थाँरो, अति प्यार करो तो थाँरो॥ ४ ॥

आप म्हारा हो

(८)

मैं थाँरो मैं थाँरो मैं थाँरो हूँ राम।
थे म्हारा थे म्हारा थे म्हारा हो राम॥ टेर॥
थे म्हारा मालिक हो, थे म्हारा दाता।
थे हो पिता म्हारा, थे म्हारी माता॥
थे म्हानें लागो हो प्यारा हो राम॥ थे॥ १ ॥
थे हो सखा म्हारा थे म्हारा नाती।
थे म्हारा संगी हो थे म्हारा साथी॥
थाँरा ही मोटा सहारा हो राम॥ थे॥ २ ॥
तन भी है थाँरो यो मन भी है थाँरो।
जो कुछ जगतमें है सबही है थाँरो॥
थे म्हाँसूं कबहूँ न न्यारा हो राम॥ थे॥ ३ ॥

पूर्ण शरणागति

(९)

म्हारा नटराजा, थाँरे नचायो नाचूं॥ टेर॥
थाँरे घरमें रहूँ निरन्तर थाँरी हाट चलाऊँ।
थाँरे धनसे थाँरा जनकी, सेवा टहल बजाऊँ॥ म्हा०॥ १ ॥
ज्याँ रँगरा कपड़ा पहिरावे, वैसो स्वाँग बणाऊँ।
जैसा बोल बुलाबे मुखसूं, वैसी बात सुणाऊँ॥ म्हा०॥ २ ॥
रूखा सूका जो कुछ देवे, थाँरे भोग लगाऊँ।
खीर परुस या छाछ राबड़ी, सबड़ प्रेमसे पाऊँ॥ म्हा०॥ ३ ॥
घरका प्राणी कयो न माने, मन मन खुशी मनाऊँ।
थाँरे इण मंगल विधानमें, मैं क्यूं टाँग अड़ाऊँ॥ म्हा०॥ ४ ॥
जो तूँ ठौकर मार गिरावे, लकड़ी ज्यूं गिरज्याऊँ।
जो तूँ माथे उपर बिठावे, तो भी न शरमाऊँ॥ म्हा०॥ ५ ॥

कौस हजार पकड़ ले जावे, दौड़्यो दौड़्यो जाऊँ।
जो तूं आसण मार बिठावे, गोडो नाँय हिलाऊँ॥ म्हा०॥ ६ ॥
जो तूं तनके रोग लगावे, ओढ़ सिरख सो जाऊँ।
जो तूँ कालरूप बण आवे, लपक गोदमें आऊँ॥ म्हा०॥ ७ ॥
उलटो सुलटो जो कुछ कर ले, मंगलरूप लखाऊँ।
थाँरी मनचाहीमें प्यारा, अपनी चाह मिलाऊँ॥ म्हा०॥ ८ ॥

एक आसरो

(१०)

म्हारो थाँपर दारमदार, म्हारो थाँपर दारमदार।
मैं तो थाँरो खेल खिलौनूं, थे हो खेलनहार॥ टेर ॥
मैं तो थाँरी रामफिरकली, थे हो फेरनहार।
उलटी फेरो सुलटी फेरो, करूँ नहीं इनकार॥ १ ॥
मैं तो थाँरो झुणझुणियों हूँ, आप बजावण हार।
हरदम पकड़ हातमें राखो, छोड़ो मत सरकार॥ २ ॥
मैं तो थाँरी कठपुतली हूँ, आप नचावण हार।
थिरक थिरक कर खूब नचावो, डोरी हात तिहार॥ ३ ॥
मैं तो थाँरी गेंद हातरी, थे ही चतुर खिलार।
युगल चरण की ठौकर मारो, कर दो भवसे पार॥ ४ ॥
सब पुरुषाँ में थे पुरुषोत्तम, मैं हूँ मुरख गँवार।
अपणू समझ निभायाँ सरसी, दीज्यो मती बिसार॥ ५ ॥

प्रभुजी री पूजा

(११)

तर्ज—म्हारा चारभुजारा नाथ

म्हारे ठाकुरजीरी पूजा हरदम करता रहस्याँ जी।
म्हारे साँवरियारी पूजा हरदम करता रहस्याँ जी॥ टेर ॥

सुख दुख भेजो तो नाथ, राजी होता रहस्याँ जी।
तनसे सेवा मनसे सुमिरन मुखसे नाम लेस्याँ जी॥ १ ॥
म्हाँने मिलिया जिण करमाँसूं, थाँरी अरचा करस्याँ जी।
थाँरे भगतांमें बैठ थाँरी, चरचा करस्याँ जी॥ २ ॥
थाँरे सन्तांरी संगत म्हेतो, करता रहस्याँ जी।
थाँरी गीता रामायण चितमें, धरता रहस्याँ जी॥ ३ ॥
थाँरा दर्शणरी बाटड़ली म्हे जोता रहस्याँ जी।
थाँरे चरणांने आँसूड़ासूं धोता रहस्याँ जी॥ ४ ॥

बड़ी अचरजकी बात

(१२)

अचरज आवे जी, बड़ो अचम्भो आवे जी।
म्हारे प्रभु की किरपा देख म्हांने अचरज आवे जी॥ टेर ॥
भूल्या भटक्या फिरे जीव दारुन दुख पावे जी।
तब बिनु कारन किरपा कर वाँने मिनख बनावे जी॥ १ ॥
पापी घोर कुकरमी भी जब शरनें आवे जी।
हर लेवे वाँरा पाप ताप सब सन्त बनावे जी॥ २ ॥
और आसरो छोड़ लच्छमी पति ने ध्यावे जी।
सब ढोवे उनको भार साँवरो, ना शरमावे जी॥ ३ ॥
अन्त समय भी नाम लेत बन्धन कट जावे जी।
है कुन ऐसा दातार जगत में कोई बतावे जी॥ ४ ॥

बड़ी शरमकी बात

(१३)

लाज मराँछाँ जी, प्रभु म्हे शरम मराँछाँ जी।
थाँरी किरपा म्हारा करतब देख्याँ लाज मराँछाँ जी॥ टेर ॥
खोटा खोटा करम कमाकर गरब कराँछाँ जी।
थे भेज्या ऊँचा चढ़बाने नीचा उतराँछाँ जी॥ १ ॥

सत पुरुषाँ रो संग छोड़ उलटा बिचराँछाँ जी।
खोटा करमाँ रो कूड़ो भीतर मायँ भराँछाँ जी॥ २ ॥
बिगड़्या सो तो बिगड़ गया, थाँरा बिगड़्या छाँ जी।
अब कृपा करो हे नाथ, आपकी शरण पड़्या छाँ जी॥ ३ ॥

प्रभु-कृपाकी वर्षा

(१४)

म्हारे प्रभुकी बड़ी अपार, किरपा बरष रही जी बरष रही।
समझे तो बेड़ा पार, किरपा बरष रही जी बरष रही॥ टेर ॥
पहली किरपा मिनख बणाया, संताँ निकट लाय बैठाया।
हरिका मारग सुगम बताया, खोल दिया भंडार॥ १ ॥
पापी अरु मूरख नर नारी, हरि भगतीका सब अधिकारी।
कोइ नहिं यामें हलका भारी, दाता बड़ा उदार॥ २ ॥
सुख दुख घाटो नफो बिमारी, है साधन सामगरी सारी।
हरि मिलनेंरी हो रहि त्यारी, मूँडो मती बिगाड़॥ ३ ॥
म्हे म्हारा संकल्प मिटावाँ, क्यूँ म्हे झूठी अकल लगावाँ।
हरि सुमिराँ हरिका गुण गावाँ, राख धणीं पर भार॥ ४ ॥

प्रभुसे प्रार्थना

(१५)

नाथ थाँरे शरण पड़ी दासी।
मोय भवसागर से त्यार काटद्यो जनम मरण फाँसी॥
नाथ मैं भोत कष्ट पाई।
भटक भटक चौरासी जूणी मिनख देह पाई। मिटाद्यो दुखाँ की रासी॥
नाथ मैं पाप भोत कीन्हा।
संसारी भोगाँ की आसा दुःख भोत दीन्हा। कामना है सत्यानासी॥
नाथ मैं भगती नहिं कीन्ही।
झूठा भोगाँ की तृसनामें ऊमर खो दीन्ही। दुःखअबमेटेअविनासी॥

नाथ अब सब आसा टूटी।
थाँरे श्री चरणाँ री भगति एक है संजीवनि बूँटी। रहूँ नित दरसण की प्यासी॥

शरणागति

(१६)

नाथ थाँरे शरणे आयो जी!
जचे जिसतराँ खेल खिलाओ, थे मनचायो जी॥
बोझो सभी ऊतर्‌यो मन को, दुख बिनसायो जी।
चिन्ता मिटी बड़े चरणाँ को, सहारो पायो जी॥
सोच फिकर अब सारो थाँरे ऊपर आयो जी।
मैं तो अब निश्चिन्त हुयो अंतर हरषायो जी॥
जस अपजस सब थाँरो मैं तो दास कुहायो जी।
मन भँवरो थाँरे चरन कमल में जा लिपटायो जी॥

पूर्ण समर्पण

(१७)

नाथ मैं थाँरो जी थाँरो।
चोखो बुरो कुटिल अरु कामी जो कुछ हूँ सो थाँरो॥ टेर ॥
बिगड़्यो हूँ तो थाँरो बिगड़्यो, थे ही मने सुधारो।
सुधर्‌यो तो प्रभु सुधर्‌यो थाँरो, थाँ सूँ कदे न न्यारो॥ १ ॥
बुरो बुरो मैं भोत बुरो हूँ, आखिर टाबर थाँरो।
बुरो कहाकर मैं रह जास्यूँ नाम बिगड़सी थाँरो॥ २ ॥
थाँरो हूं थाँरो ही बाजूं, रहस्यूँ थाँरो थाँरो।
आँगलियाँ नुँह परे न होवे, या तो आप बिचारो॥ ३ ॥
मेरी बात जाय तो जावो, सोच नहीं कछु म्हारो।
म्हारे सोच बडो़ यो लाग्यो, बिरद लाजसी थाँरो॥ ४ ॥
जचे जिसतरां करो नाथ अब, मारो चाहे त्यारो।
जाँघ उघाड़्याँ लाज मरोला, ऊँडी बात विचारो॥ ५ ॥

प्रभुको आश्वासन

(१८)

तूँ भाई म्हारो रे म्हारो!
तूँ म्हारो तेरो सब म्हारो, जग सारो ही म्हारो॥ टेर॥
मनमें सदा दूसरो समझे, ऊपर से कहे थाँरो।
म्हारो होतां सातां भी वो, रहे म्हारे से न्यारो॥ १॥
एक बार जो कपट छोड़कर, कहे नाथ मैं थाँरो।
सो म्हारे सगला पुतराँ में, अधिक लाडलो प्यारो॥ २॥
सदा पातकी सदा कुकरमी, बिषयाँ में मतवारो।
मैं थाँरो यूँ साँचे मनसे, कहताँ ही हो म्हारो॥ ३॥
झटपट पुन्यवान सो होवे, पापाँ से छुटकारो।
म्हारो म्हारी गोद विराजे, कदे न म्हाँसूँ न्यारो॥ ४॥
तन मन बाणी से जो म्हारो, सो निश्चय ही म्हारो।
कदे न लाज्यो, कदे न लाजे नाम बिड़द जस म्हारो॥ ५॥

प्रियता

(१९)

म्हाँने तो म्हारा रामजी सुहावे, दूजो म्हारे दाय कोनी आवे हे माय।
दाय कोनी आवे म्हारे मन नहिं भावे,
म्हारो देखत जियो घबरावे हे माय॥ टेर॥
मीराँ मगन होय गुन गावे, हरिजी में सुरता समावे हे माय।
राणोजी बिष का प्याला भेज्या, बिषड़े ने अमृत बनावे हे माय॥ १॥
नामदेव की छांन छवाई, कबिरे के बालद लावे हे माय।
सेन भगत रा साँसा मेट्या, धन्ने को खेत निपजावे हे माय॥ २॥
भिलनी रा बेर सुदामा रा तन्दुल, करमाँ रो खीचड़ खावे हे माय।
दुरियोधन रा मेवा त्याग्या, साग विदुर घर पावे हे माय॥ ३॥
जहँ जहँ भीड़ पड़े भगतन में, तहँ तहँ दौड़या आवे हे माय।
जल डूबत गजराज उबार्‌यो, जल माहीं चक्र चलावे हे माय॥ ४॥
काईं कहूँ म्हारे प्रभुजी री महिमा, बेद पार नहिं पावे हे माय।
नरसीले रो सेठ साँवलियो, भगताँ रो मान बढ़ावे हे माय॥ ५॥

इमरत-बूँटी

(२०)

पीवो गीता इमरत बूंटी यह संजीवनी जी॥ टेर॥
पढ़ पढ़ नया नया उपन्यास,
कर लियो जीवन सत्यानाश,
फिर भी होज्यो मती निराश,
लज्या राखण वाला गिरधारी मोटा घणीं जी॥ १॥
गीता पाठ करो नित नेमा,
छोड़ो टी० वी० खेल सिनेमा,
पावो भगती प्रभु की प्रेमा,
ऐसी मिले न बारम्बार मौज मिनखा तणीं जी॥ २॥
जागो रैण पड़याँ जब सोवो
गीता दरपण में मुख जोवो
पातक जनम जनम रा खोवो
बरसे ठाकुरजी री संताँरी किरपा घणीं जी॥ ३॥
पढ़कर देखो निजर पसार
भरिया भाव अनन्त अपार
प्रभु की शरणागति है सार
सारी भव बाधा मेटण की यह चिन्तामणीं जी॥ ४॥

प्रार्थना

(२१)

गोविन्द म्हाँने गीता ग्यान सुनाओ म्हारा श्याम।
परमेश्वर म्हारी नैया पार लगाओ म्हारा श्याम॥
बसुदेवजी रा हो लाडला॥ टेर॥
दीन्ही प्रभु के हात में, बागडोर पकड़ाय।
रथ हाँकन लाग्या हरी, अरजुन यूँ बतलाय॥
नारायण रथ ने सेना बिच ठहराओ म्हारा श्याम॥ १॥

रनभूमी के बीच में, उपज्यो कुटुम्ब सनेह।
सस्त्र हात से छुट रया थर थर काँपे देह॥
केशव जी म्हाँसू क्यूँ थे जुद्ध कराओ म्हारा श्याम॥ २ ॥
बाणाँ री बोछाड़ सूँ खप जासी सब वीर।
कुटुम्ब आपणों है सभी, किस बिध छोड़ूँ तीर॥
पुरुषोत्तम म्हारी ममता मोह छुटाओ म्हारा श्याम॥ ३ ॥
रथ के पीछे बैठग्या, तज्या धनुष अरु बाण।
शरनागत अरजुन हुया, करो प्रभो कल्याण॥
नारायण म्हारे दिल की जलन मिटाओ म्हारा श्याम॥ ४ ॥
मैं शरनागत शिष्य हूँ थे गुरुदेव हमार।
करनूं कछु जानू नहीं, धरम अधरम विचार॥
माधव जी म्हाँने हित की बात बताओ म्हारा श्याम॥ ५ ॥
जगत गुरु श्री कृष्ण जी, सबका जीवन प्रान।
मँगसर सुद एकादसी, प्रगट्या गीता ग्यान॥
मनमोहन म्हाँने वो ही इमरत प्यावो म्हारा श्याम॥ ६ ॥

उपदेश

(२२)

सुन अरजुन प्यारा क्यूँ इतना घबराओ म्हारा तात।
कुन्ती सुत प्यारा कायरता मत लाओ म्हारा तात॥
कुन्ती भुआजी का हो लाडला॥ टेर ॥
जिन्ह की तूँ चिन्ता करे, मरे न कोई वीर।
अजर अमर है आतमा, मरसी सकल शरीर॥
सुन पारथ प्यारा सबसे मोह हटाओ म्हारा तात॥ १ ॥
शोक करन लायक नहीं, तूँ छत्रिय रनधीर।
धरम जुद्ध है सामने, ताँण धनुष पर तीर॥
पांडव सुत प्यारा क्षत्रिय धरम निभाओ म्हारा तात॥ २ ॥

जीत होय या हार हो, नफो होय नुकशान।
सुख बरषे या दुख पड़े, सबमें रहो समान॥
सुन अरजुन प्यारा मोमहँ चित्त लगाओ म्हारा तात॥ ३ ॥
मोर आसरे रहो सदा, करम करो निसकाम।
कृपा है म्हारी सहज ही, नाशे बिघन तमाम॥
कुन्ती सुत प्यारा बेगा धनुष उठाओ म्हारा तात॥ ४ ॥
तज निरनय सब धर्म को, सरन एक रहु मोर।
मुक्त करूँ सब पाप से, चिन्ता मत कर ओर॥
पांडव सुत प्यारा यह इमरत पी जाओ म्हारा तात॥ ५ ॥

प्रभुको निज स्थान

(२३)

गीता निज घर म्हारो रे।
गीता ग्यान प्रचारक म्हारो, प्रियतम प्यारो रे॥ टेर ॥
गीता म्हारे मुख की बानी, गीता म्हारो ग्यान।
गीता मन अरु बुद्धि म्हारी, गीता म्हारा प्रान।
रहूँ मैं किस बिध न्यारो रे॥ १ ॥
गीता म्हारो सरूप है रे, गीता म्हारा स्वास।
गीता म्हारे धन की कुँजी, राखूँ हरदम पास।
करूँ जगमें उजियारो रे॥ २ ॥
गीता कोरी पुस्तक नाहीं, सब धरमाँ रो सार।
गीता धारन करे उनाके, चालूँ हरदम लार।
ढ़ोय सिर ऊपर भारो रे॥ ३ ॥
गीता ग्यान प्रचार करण नें, मिनख भेष में आऊँ।
मुकती रो भंडार खोलकर, सबने नूत जिमाऊँ।
होय कोई जिम्मण हारो रे॥ ४ ॥
गीता सों सृष्टी रच सारी, पालन करूँ हमेश।
चारौं बेद पुरान शास्त्र में, गीता ग्यान विशेष।
लखे कोई जानन हारो रे॥ ५ ॥

गीता बिन रीता

(२४)

समझ मन गीता नहि गासी।
पढ़ पढ़ बाताँ घणीं सीख ले, रीता रह जासी॥ टेर॥
कूड़ कपट कर माया जोड़े, संग न कछु जासी।
लड़ आपस में माध्या भाई, खोस खोस खासी॥ १ ॥
सुख सुविधा में गयो जमारो, काल करे हाँसी।
दुरलभ मिनखा जनम बिगाड़्यो, भुगतो चौरासी॥ २ ॥
कान खोल सुन ले रे मनवा, नहिं तो पछितासी।
संत सुजाण मार रया हेला, फेर कुण समझासी॥ ३ ॥
तूं ईश्वर को अंश जीवड़ा, अमरापुर बासी।
थारो जनम मरन नहिं होवे, तूँ है अबिनाशी॥ ४ ॥

नीचा मत उतरो

(२५)

जीव क्यूँ हेटो उतर्‌याँ जावे रे, नेड़ो म्हारे आव।
नेड़ो म्हारे आव थोड़ो पास म्हारे आव॥ टेर॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, मिनखा देही मायँ।
फेर क्यूँ चौरासी में जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ १ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, सत पुरुषाँ रे पास।
फेर क्यूँ खोटे सँग में जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ २ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, कर ले म्हाँसूँ प्रेम।
फेर क्यूँ भोगां में लिपटावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ३ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, जग सेवा रे काज।
फेर क्यूँ निरबल जीव सतावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ४ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, बणबा ने दातार।
फेर क्यूँ खोस खोस कर खावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ५ ॥

मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, कर ले अपनीं खोज।
फेर क्यूँ दुरगुण खोजन जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ६ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, निरमल होज्या जाय।
फेर क्यूँ ममता मैल लगावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ७ ॥
मैं तो तन्ने भेज्यो जिवड़ा, ऊँचो चढ़ज्या आय।
फेर तूँ दल दल में मत जावे रे, नेड़ो म्हारे आव॥ ८ ॥

बुलाओ

(२६)

आओ रे भाईड़ा आपाँ हरि गुण गावाँ
कलजुग में सतजुग ल्यावाँ॥ टेर॥
भाई बंधु रूठे चाहे रूठे जग सारो,
एक नहीं रूठे प्यारो सांवरियो हमारो,
भव सागर में गोता नहीं खावाँ॥ १ ॥
आड़ोसी पाड़ोसी ने भी संग लेता चालो जी,
बैरी भी होवे तो वाँने गले से लगा लो जी,
हिल मिल चाल्याँ घणाँ सुख पावाँ॥ २ ॥
नींदड़ली फिरे है आडी करेली बिगाड़ो,
खेंचे सुख भोग तो भी पाछा ना पधारो,
पाछा फिर्‌याँ सूं घणाँ पछितावाँ॥ ३ ॥
माता बहना भाई जठे राम धुन गावे,
रामजीरा घणाँ प्यारा संत बठे आवे,
जाकी किरपा सूं आपाँ तिरजावाँ॥ ४ ॥

संत-मिलनकी उत्कंठा

(२७)

मैं निशदिन रहूँ उदासी, म्हारो वो शुभ दिन कब आसी॥ टेर॥
म्हारी आँख फरूखे माई, कोई सन्त मिलेला काईं।
म्हारो रोम रोम हरषावे, म्हारो हियो उछाला खावे॥ १ ॥

कोई महापुरुष अब आवे, मोहि डूबत आन बचावे।
ज्याँरा बचन बाण ज्यूं लागे, म्हारा भाग्य पुरबला जागे॥ २ ॥
मैं ब्राह्मण नूत जिमावूं शिवजीरो ध्यान लगावूं।
देहली पर दिवलो जोवूं, हरि चरणां में चित पोवूं॥ ३ ॥
कोई है अवधूत विरागी, आशा तृष्णाँ रा त्यागी।
कहसी सो हुकुम बजास्याँ, म्हे फेर जनम नहि पास्याँ॥ ४ ॥

संत-मिलन

(२८)

म्हारे आया आया आया, म्हारे संत पाहुणा आया॥ टेर ॥
मैं बाँटूं आज बधाई, म्हारे घर पर गंगा आई।
म्हारी बढ़ गई बेल सवाई, म्हारी हो गई सुफल कमाई॥ १ ॥
ऊपर चढ़ मारूं हेलो, मैं कर ल्यूँ सब जग भेलो।
कोई आवो रे भाई आवो, थे जीवन सफल बणावो॥ २ ॥
म्हारी रग रग भीतर नाचे, म्हारो आँगण जगमग राचे।
मैं इत आऊँ उत जाऊँ, जाँ री किस बिध टहल बजाऊँ॥ ३ ॥
ए तो रस बरषावण आया, सँग हरि-भगतांने लाया।
म्हारी कंचन कर दी काया, सूतांने आन जगाया॥ ४ ॥

(२९)

चाल रे, चाल रे, चाल रे, तन्ने मिनख बणायल्याउँ चाल रे॥ टेर ॥
बिन सतसंग न मिनख कहावे, काले माथे रो कंकाल रे॥ १ ॥
सतसंगतकी गोठ लगी है, उड़ रया मालामाल रे॥ २ ॥
निरधन आवे धनपति होवे, खुली पड़ी है टकसाल रे॥ ३ ॥
कलजुगमाहीं सतजुग ल्याया, धन धन संत दयाल रे॥ ४ ॥
छोड़ जगतका गोरखधंधा, यो अवसर मत टाल रे॥ ५ ॥
महापुरुषाँरा दरशण दुरलभ, पड़रयो जगमें काल रे॥ ६ ॥
जो संतनकी सीख न माने, जमड़ा कूटे थारी खाल रे॥ ७ ॥
दास अग्यात करो सतसंगत, हो जाओ सबहि निहाल रे॥ ८ ॥

(३०)

म्हारो दुखड़ासूं पिन्ड छुटावण दे, सतसंगतमें जावण दे।
म्हारो आवागवन मिटावण दे, सतसंगतमें जावण दे॥ टेर ॥
ना मैं माँगू माल मलीदा, मोठ बाजरी तो खावण दे॥ १ ॥
ना मैं देखूँ नाटक सिनेमा, प्रभुजीको ध्यान लगावण दे॥ २ ॥
मैं म्हारे प्रभुका गुण गाऊँ, और गीत मत गावण दे॥ ३ ॥
निन्दा चुगली करे करणियाँ, मन्ने तो हरिगुण गावण दे॥ ४ ॥
आज बणी है म्हारे राम रसोई, ठाकुरजीके भोग लगावण दे॥ ५ ॥
आज म्हारे तो घर संत पधारया, रामजीको रँग बरसावण दे॥ ६ ॥
शुकसागर रामायण गीता, रस भरी कथा सुणावण दे॥ ७ ॥
चाहे तूँ मन्ने मार कूटले, चाहे तो रोटी मत खावण दे॥ ८ ॥
चालो जी पियाजी बैकुण्ठ ले ज्याऊँ, परमानन्द सुख पावण दे॥ ९ ॥

सत्संगमें लावो

(३१)

अकेला काईं आवो रे सतसंगत में भाई।
औराँ ने साथे ल्यावो रे सतसंगत में भाई॥
घरकाँ ने साथे ल्यावो रे सतसंगत में भाई॥ टेर ॥
मात पिता भायाँ ने ल्यावो, ल्यावो चाची ताई।
बेटा और बहू ने ल्यावो, बेटी संग जँवाई॥ १ ॥
सासू ने सुसराँ ने ल्यावो, सालाँ ने समझाई।
समधी ने समधणनें ल्यावो खातिर करो सवाई॥ २ ॥
जाती ने न्याती ने ल्यावो, ल्यावो घर को नाई।
बहन भाणजी भूवा ने ल्यावो, बाँटो आज बधाई॥ ३ ॥
बैरी ने दुशमण नें ल्यावो, दीज्यो बैर हटाई।
पास-पड़ौसी सबनें ल्यावो, सबकी करो भलाई॥ ४ ॥
गाँव-शहर की गली-गली में, हेलो द्यो फिर वाई।
परमेश्वर ने अपना मानो, या ही बड़ी कमाई॥ ५ ॥

जनताको सौभाग्य

(३२)

मौको लाग्यो रे (बीकाणां) (जैपुरिया) (बम्बइकाँ) (कलकत्ता)।
थाँरो भाग जाग्यो रे, मौका लाग्यो रे॥ टेर॥
गली गली हरि-चरचा होवे, जाणें सत् जुग आग्यो रे।
मुकतीरो दरवाजो खुलग्यो, कलजुग भाग्यो रे॥ १॥
दूर दूर सूं सन्त पधार्‌या, वाँरो मेलो लाग्यो रे।
मरू भूमि पर इमरत बरषे, आनन्द छाग्यो रे॥ २॥
भूल्यो भटक्यो जीव-जन्तु जो, इण अवसर में आग्यो रे।
तीरथ सारा कर लीन्हा वो, गंगा न्हाग्यो रे॥ ३॥
ऐसो अवसर बार बार फेर, नहीं मिले लो माँग्यो रे।
धरमराज ऊपरसूं आकर, ढोल घुराग्यो रे॥ ४॥

(३३)

आज सखी धन्य भाग्य है म्हारा,
आँगण आया प्रभुजी का प्यारा॥ टेर॥
हरिजी का प्यारा जगत सूं है न्यारा,
म्हाँने तो लागे वे प्राणा सूं प्यारा॥ १॥
हरिजी का प्यारा हरि सूं मिलावे,
सुख का भोगी नरक ले जावे॥ २॥
समता सांच सील व्रत धारी,
दैवी संपति का अधिकारी॥ ३॥
हरिजी का प्यारा ने हरिजी ही जाणे,
पापी पामर नहिं पहचाणे॥ ४॥
बिनती करूँ प्रभु घट घट बासी,
करज्यो हरि भक्तन की दासी॥ ५॥

धन्य भाग्य

(३४)

तर्ज—गोपीचन्द लड़का

धन्य भाग है म्हारा, हरिजी रा प्यारा आया गाँवमें।
धन्य भाग है म्हारा, प्रभुजी रा प्यारा आया गाँवमें॥ टेर॥
दर्शण सूं अँखिया ठरे रे, परसत पुलके अंग।
आज्ञा पालन जो करे रे, चढ़े भक्ति को रंग जी॥ १॥
गंगा तट पर जो बसे रे, लागत ठंडी बाल।
ज्यों संताँरे, संगसूं रे, तपत बुझे ततकाल जी॥ २॥
जनम दुखी कोई जीवड़ो रे, लिख्या विधाता लेख।
मारग बहतां संत मिले तो, मिटे करम री रेख जी॥ ३॥
गंगा जमुना सरस्वती रे, तीरथ चारौं धाम।
आन मिलें सब साथ में रे, सन्त बसे जेहि गाँव जी॥ ४॥
रीझो चाहे खीजो प्रभुजी, दीजो मती बिसार।
संता सूं बिछुड़न मत कीज्यो, पल पल अरज हमार जी॥ ५॥

सत्संग करनेंरी प्रेरणा

(३५)

आवो रे साथीड़ाँ आपाँ सतसंगतमें जावाँला॥ टेर॥
सतसंगतमें जावाँला म्हे जीवन सफल बनावाँला।
कलजुगमें सतसंगत करके, सत् जुग कर दिखलावाँला॥ १॥
पास पड़ौसी कुटुम्ब कबीलो, सबनें नूत बुलावाँला।
गाँव शहर और गली गली में, हेलो आज फिरावाँला॥ २॥
ऐसो मौको फिर नहिं लागे, कुण जाणे कित जावाँला।
दुर्लभ है संताँरा दर्शण, फेर दर्शण कब पावाँला॥ ३॥
भीड़ होय तो सरक सरक कर, भेलासा होज्यावाँला।
आवणियाँ नें आदर देस्याँ, कर सत्कार बिठावाँला॥ ४॥

चुप होकर के सुणाँ ध्यानसूं, बाताँ नहीं बनावाँला।
औराँ रे सुणणेंमे म्हेतो, बाधा ना पहुँचावाँला॥ ५ ॥
महापुरुषाँरी चुग चुग बाताँ, हिरदे माँय बिठावाँला।
अवगुण सारा तज कर म्हेतो, हरि-चरणां चित लावाँला॥ ६ ॥

रामजी री किरपा

(३६)

मौको रामजी मिलायो, दुर्लभ मिनखा देही पायो,
जिवड़ा सत्संगत में चाल, थारो काईं बिगड़े॥ टेर॥
सामो पुरुस्योड़ो है थाल, चौड़े जीमो मालामाल,
काटो चौरासी रो काल, थारो काईं बिगड़े॥ १ ॥
गाय पावसियोड़ी त्यार, झर-झर बहवे दूधाँधार,
होज्या पीवणने तैयार थारो काईं बिगड़े॥ २ ॥
सबकी कर सेवा उपकार, मुखसों हरि हरि नाम उचार,
झट हो ज्यावे बेड़ापार, थारो काईं बिगड़े॥ ३ ॥

हर-नगरी

(३७)

तर्ज—केवट तूँ कर दे पार

बीरा गंगा के तटपर चाल, दिखऊँ तन्नें हर नगरी।
बीरा संताँरा दरशन होय, भीड़ हरि भगतन्ह री।
बीरा मिलै न बारमबार, मौज मिनखा तन री।
बीरा अमरित भरिया होद, बहत नदियाँ धन री।
बीरा होले तो होले मत चाल, करो न देरी पल छिन री।
बीरा जनम सुफल होय जाय, मिटे दुबिधा मन री।

सत्संग करने री जिग्यासा

(३८)

म्हाँने सतसंगतरो कोड, लावो म्हे लेस्याँ जी म्हे लेस्याँ।
म्हाँने हरि मिलणरो चाव, लावो म्हे लेस्याँ जी म्हे लेस्याँ॥ टेर॥

आज अकेला म्हे नहिं आवाँ सबनें नूतो देय बुलावाँ।
आदरसूं आगे बैठावाँ जीवणरा दिन चार॥ लावो०॥ १ ॥
पहले तो म्हे दर दर भटक्या औराँरे दिलमाहीं खटक्या।
ममता मोह लोभ में अटक्या, कर भीतर छुटकार॥ लावो०॥ २ ॥
पग धरणेंरी आश नहीं है भजनकी पूंजी पास नहीं है।
स्वासाँ रो विसवास नहीं है, कब निकले फूंकार॥ लावो०॥ ३ ॥
सुण बाताँ हिरदेमें धरस्याँ, मिल आपसमें चरचा करस्याँ।
खोटा काम करणसूं डरस्याँ, हरि-भज उतराँ पार॥ लावो०॥ ४ ॥

सत्संगसे ग्यान

(३९)

जासूं प्रगटेलो हियेमाहीं ज्ञान, संगत कर ले सन्तन की॥ टेर॥
सन्तन का सँग जो करे रे, बगुला हंस हो जाय।
कूड़ा करकट छोड़के रे, मोतीड़ा चुग-चुग खाय॥ १ ॥
संत मिलन को चालिये रे, तज ममता अभिमान।
ज्यों-ज्यों पग आगे धरे रे, कौटिन यज्ञ समान॥ २ ॥
संत हमारे मात पिता हैं, सन्त है भाई बन्ध।
संत मिलावे रामसों रे, काटेहै जमकेरो फन्द॥ ३ ॥
सन्त हमारी आतमा रे, हम सन्तन की देह।
रोम रोम में रमरया रे, जैसे बादल बिच मेह॥ ४ ॥

(४०)

सतसँग माहिं पधारिया जी संतां राम राम जी।
भूल चूक की जो माफ, घणा घणा राम राम जी॥ टेक॥
बिरछ लगायो सतसंग रो जी संतां राम राम जी।
सींचत रहिज्यो आप, घणा घणा राम राम जी॥ १ ॥
दे दरशण म्हांने धन्य कियाजी संतां राम राम जी।
मेट्या भव दुख संताप, घणा घणा राम राम जी॥ २ ॥

नित म्हांने रहज्यो सँभालता जी संतां राम रामजी।
आप हो गुरु माँ बाप, घणा घणा राम रामजी॥ ३ ॥
गुण नहिं भूलां आपरो जी संतां राम रामजी।
पल पल सीस नवाय, घणा घणा राम रामजी॥ ४ ॥
तागो हुवे तो तोड़ ल्यूं जी संतां राम रामजी।
प्रीति न तोड़ी जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ५ ॥
कागद हुवे तो बाँच ल्यूं जी संतां राम रामजी।
करम न बाँच्यो जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ६ ॥
कुओ हुवे तो डाक ल्यूं जी संतां राम रामजी।
समँदर डाक्यो न जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ७ ॥
वस्तु हुवे तो परख ल्यूं जी संतां राम रामजी।
किस्मत परखी न जाय, घणा घणा राम रामजी॥ ८ ॥
रामजी मिलावे तो फेर मिलां जी संतां राम रामजी।
करां मिल हरि गुण गान, घणा घणा राम रामजी॥ ९ ॥
प्रभु म्हारा दीनदयाल है जी संतां राम रामजी।
दीन्हा अस जोग मिलाय, घणा घणा राम रामजी॥ १० ॥

(४१)

प्यारा लागो जी, प्रभुजी म्हाँने प्यारा लागो जी।
ओजी म्हारे और कछू नहीं चाह॥ प्रभु०॥ १ ॥
घरमें राखो जी, प्रभुजी चाहे बाहर राखो जी।
ओजी म्हांरी डोरी थाँरै हात॥ प्रभु०॥ २ ॥
दुख सूं राखो जी, प्रभुजी चाहे सुख सूं राखोजी।
ओजी म्हांने राखो संतन साथ॥ प्रभु०॥ ३ ॥
और न कोई जी, प्रभुजी म्हारे दूजो न कोई जी।
ओजी म्हारा अंतरजामी आप॥ प्रभु०॥ ४ ॥
मत बिसराओजी, प्रभुजी म्हांने क्यूं बिसराओ जी।
ओजी थाँरे शरण पड़ी म्हारा श्याम॥ प्रभु०॥ ५ ॥

भगवानद्वारा भगतां री महिमा

(४२)

म्हारा भगत जगत् में थोड़ा सा,
ज्याँरी महिमा वरणी नां जाय,
सुन रे उद्धव म्हाँने भगत बिना नहिं आवड़े॥ टेर ॥
म्हेतो अन्न जल पावाँ भगताँ रे,
म्हाँनें औराँरो अन्न नहिं भाय॥ सुन०॥ १ ॥
म्हारा भगत है सिरका सेहरा,
म्हारा भगत है जीवन प्राण॥ सुन०॥ २ ॥
जठे चरण टिके म्हारे भगताँरा,
बठे धर देवाँ दोन्यू हाथ॥ सुन०॥ ३ ॥
म्हारे लिछमी सी सुन्दर घर वारी,
म्हारे ब्रह्मा सरिसा पूत॥ सुन०॥ ४ ॥
धारूँ भगताँरै कारज नर-देही,
लेवूं जुग जुग में अवतार॥ सुन०॥ ५ ॥
मैं तो भगताँरै चरणाँरी रज पावूं,
फिरतो रहवूं मैं हरदम लार॥ सुन०॥ ६ ॥
म्हारे भगताँरी चरचा सुणबानें,
चल्यो, जाऊँ मैं कोस हजार॥ सुन०॥ ७ ॥

प्रभुजीसे प्रार्थना

(४३)

प्रभु थांरा दरशण किस बिध पाऊँ,
मन विषयनमें फँस गयो मेरो,
कहो कैसे सुलझाऊँ॥ टेर ॥
कुटुम्ब कबीलो सुत दारा सँग, रहकर अलग ना पाऊँ।
हुकुम करो तो पिन्ड छटाऊँ, जंगलमें बस जाऊँ॥ १ ॥

पाप करम कर पेट भरनकी, जहँ-तहँ शिक्षा पाऊँ।
भजन करनकी कोई नहिं कहवे, कररया खाऊँ खाऊँ॥ २ ॥
मान बड़ाई सुण सुण मनमें, फूल्यो नांय समाऊँ।
ऊपर ऊपर हरिगुण गाऊँ, भीतर लोग रिझाऊँ॥ ३ ॥
म्हारे हियेमें ठौर तिहारी, बस गया आन बटाऊ।
बिड़द रखो तो बेगि बचावो, चलत न मोर उपाऊ॥ ४ ॥

अवसरको लाभ

(४४)

अवसर मत चूको मत चूको, भाई पावो प्रेम प्रभू को॥ टेर ॥
भोगाँरी या चमक दमक पर फिदा होय मत सूको।
मिले जिस्या ही खाय ढ़ोकला, हरिको नाम धड़ू को॥ १ ॥
लाख काम तजि आतुर होके, सतसंगत में ढूको।
काम क्रोध मद लोभ मोह को, ज्ञान अगनि से फूंको॥ २ ॥
करम करो निषकाम भाव से, मारग में मत रूको।
कर अरपन सब प्रभु चरणा में, दास भाव से झूको॥ ३ ॥
बैठ एकान्त हरी के सनमुख फाड़ कलेजो कूको।
सटके अरजी सुणे साँवरो, असल प्रेमको भूको॥ ४ ॥
जा पहुँचो बैकुंठ धाम, कलजुग के मार घमूको।
फेर जनम नहिं होय जगत में इमरत सें क्यूं ऊको॥ ५ ॥

मातृदेवो भव, पितृदेवो भव

(४५)

थे भूलज्यो सब कुछ मगर माँ बाप नें मत भूलज्यो।
करजो घणूँ माँ बाप को सिर पर चढ्यो मत भूलज्यो॥ टेर ॥
मुखड़ो तो थारो देखणें हित, देवता पूज्या घणाँ।
जलम्या जणाँ हरख्या घणाँ, इण बातनें मत भूलज्यो॥ १ ॥
चढ़ डागले थाली बजा, सगलो कुटुम्ब भेलो कियो।
गुड़ गाँव में घर-घर बँटायो, लाड यो मत भूलज्यो॥ २ ॥

माँ बाप का कपड़ा करया, मल मूतस्यूँ थे सूगला।
धो पूंछ कर छाती लगाया, प्यार यो मत भूलज्यो॥ ३ ॥
थे चूँगता रोगी हुया, खाई दवाई मावड़ी।
टूणाँ कर्‌या निजराँ उतारी, वा वखत मत भूलज्यो॥ ४ ॥
जद रुत सियाली रात आधी, मूत गुदड़ा गालता।
तब साफ कर सूखे सुवाती, वा घड़ी मत भूलज्यो॥ ५ ॥
अति गन्दगी में आँगल्याँ भर, थे लकीराँ माँडता।
तब हाय छी! छी! कर नहलाया, वा घड़ी मत भूलज्यो॥ ६ ॥
माता सिखायो बैठणूँ तो, थे गुड़क गिर जावता।
फिर बोलणूँ चलणूँ सिखायो, वे दिवस मत भूलज्यो॥ ७ ॥
टुक तोड़ मुख को गासियो, गोडे बिठा मुखमें दियो।
थे उगल पाछा थूक भरता, वे दिवस मत भूलज्यो॥ ८ ॥
अब तो बडी बाताँ बणावो, (या) देण सब माँ बाप की।
थे छेद मत करज्यो कलेजे, जुग जुगाँ मत भूलज्यो॥ ९ ॥
खुद थे कमायो धन घणूँ, माँ बाप ने ठार्‌या नहीं।
या धूल है ऐसी कमाई, बात या मत भूलज्यो॥ १० ॥
थे अगर निज संतान सूं, सुख मिलन की आशा करो।
खुश हो सदा माँ बाप की, सेवा करो मत भूलज्यो॥ ११ ॥
धन खरचताँ मिलसी सभी, माता पिता मिलसी नहीं।
थे नित नवावो सीस चरणन्ह में जरा मत भूलज्यो॥ १२ ॥
थी मात कैकई पिता दशरथ, बचन प्रभु टाल्या नहीं।
श्रीराम जीत्या लंकनें, सिया राम नें मत भूलज्यो॥ १३ ॥

लोक-रुचिकी लापरवाही

(४६)

भाई रे कर ली साँवरियाजीसूं यारी,
तो दुनियाँदारी कुछ भी कहो॥ टेर ॥

कोई कहे धुरत पाखंडी कोई कहे अनाड़ी।
कोई कहे मतलबरो पक्को कपट करण हुँसियारी॥ रे०॥ १ ॥
कोई कहे फिरे मोडाँमें छोड़ी दुकानदारी।
कोई कहे बन्यो निरमोही दुख पावे है घरकी नारी॥ २ ॥
कोई कहे मुफतको खावे इज्जत गमायी सारी।
कोई कहे अचम्भो आवे पार पड़ेली कैयाँ थारी॥ ३ ॥
कोई कहे भगत बण बेठ्यो कोई कहे संसारी।
आदर मान करे बड़ कोई कोई तो देवे मुख गारी॥ ४ ॥
तज मन सोच-फिकर बड़भागी भज ले श्याम मुरारी।
डूबत नैया पार लगावै नखपर गिरिवर धारी॥ ५ ॥

मातावां भक्त संतान पैदा करें

(४७)

पुत्र जनो हरि भक्त जनो थे, सुनज्यो मायाँ बायाँ हे।
करो बडो उपकार जगत को, सुफल होत यह काया हे॥ टेर ॥
जैसे मात कयाधू ने प्रह्लाद भक्त को जाया हे।
खम्भे माँय प्रगट कर प्रभु को, घट-घट में दरशाया हे॥ १ ॥
मात सुनीती आज्ञा दीन्ही, ध्रुव तप करन सिधाया हे।
मदालसा ने लोरी देके, सुत को ज्ञान सिखाया हे॥ २ ॥
साठ हजार सगर के बेटा, कोई न गंगा लाया हे।
कुल में इक भागीरथ जनम्यो सबने मुकत कराया हे॥ ३ ॥
मात सुमित्रा लखनलाल को, राम के संग पठाया हे।
कर सेवा प्रभु की कीरति का, झंडा जग फहराया हे॥ ४ ॥
मात अंजनी हनुमत जाया, सुवरण लंक जलाया हे।
सुध ले जब सीता की आया, रघुवर ऋणी कहाया हे॥ ५ ॥
हुलसी माता तुलसी जाया, मानस ग्रन्थ रचाया हे।
मैणावति ने गोपीचन्द को, जोगी अमर बणाया हे॥ ६ ॥

भगतांरी महिमा निज मुखसूं गीता में प्रभु गाया हे।
धन! धन! वा बडभागण माता, भक्त को गोद खिलाया हे॥ ७ ॥

गोपीचन्द

[माँ मैणावतीको रोती हुई देखकर गोपीचन्द रोनेका कारण पूछ रहा है।]

(४८)

मैणावती माता नीर भर्‌यो ऐ थाँरै नैणमें।
गोपीचन्द लड़का बादल बरसे रे कञ्चन महलमें॥ टेर ॥
क्यों तूं माता उणमणी ऐ! नित की रहे उदास।
जो कोई कहवे जीभ कटावूं, करूँ दुश्मन को नाश ऐ॥ मै० १॥
ना मैं बेटा उणमणी रे, ना मैं रहूँ उदास।
रितु पलटी बादल चढ्या रे, अब बरषण की आस रे॥ गो० २॥
ना बादल ना बिजली ऐ! ना कोइ बाजे बाव।
थाँरै मन चिन्ता घणी ऐ, म्हाने सांची खोल बताय ऐ॥ मै० ३॥
सांच कहूं तो डर लगे रे, झूठ कह्याँ पत जाय।
जहाज पड़ी दरियावमें रे, अधबिच गोता खाय रे॥ गो० ४॥
जहाज पड़ी दरियावमें ऐ, कर दूँ परली पार।
मार हटावूं दुश्मन को ऐ, ले नंगी तलवार ऐ॥ मै० ५॥
म्यान धरो तलवारने रे, धरो जमी पर ढ़ाल।
कायागढ़ सूनो पड्यो रे, अपनो विरद सँभाल रे॥ गो० ६॥
मेरा विरद बसे मन तेरे, जो कोइ आज्ञा पावूँ।
बचन चूककर फिरूँ न पाछो, तुरतहि हुकम उठाऊँ ऐ॥ मै० ७॥
मुझे भरौसा पुत्र तुम्हारा, तुम हो आज्ञाकार।
राज पाट स्वपने की माया, सब झूठा संसार रे॥ गो० ८॥

[इसपर गोपीचन्द माँसे प्रार्थना करता है]

(४९)

मने राज करन दे, जोगी मत कर ऐ माँ मैणावती।
गोपीचन्द लड़का, जोगी हो जा रे चेला नाथ का॥ टेर॥

बारह बरष की ऊमर माता, मैं क्या जानूं जोग।
चरचा करे मुलकके माहीं, हँसे शहर का लोग ऐ॥ मने० १ ॥
मेरा बचन फिरे नहिं पीछा, यह पुरुषों का बाक।
तेरिसि सुरत तेरे बापकी रे, जल बल हो गई खाख रे॥ गोपी० २ ॥
तेरा बचन फिरे नहिं पीछा, जां घर पूत सपूत।
दो जुग राज करन दे माता, फिर जोगी अवधूत ऐ॥ मने० ३ ॥
पाव पलक का नहीं भरौसा, करे काल्ह की बात।
क्या जाने क्या होवसी रे, दिन ऊगे परभात रे॥ गोपी० ४ ॥
दिन ऊगे दाँतन करूँ ऐ, नित को देऊँ दान।
षट् दरसण को भाव रखूँ मैं, विप्र बधाऊँ मान ऐ॥ मने० ५ ॥
दान दिये फल होवसी रे, धन दौलत अरु माया।
असल फकीरी ले ले बेटा, अमर हो जावे, काया रे॥ गोपी० ६ ॥
काया अमर करूँ इक छिनमें, कितियक लागे बार।
परथम परन्या पदमणी ऐ, बिलखे राजकुमार ऐ॥ मने० ७ ॥
तिरिया जात जगतमें झूठी, सुन रे गोपीचन्द।
जनम-मरण से हो जा न्यारा, कटे चोरासी फन्द रे॥ गोपी० ८ ॥
कटे चोरासी फन्द जु मेरा, जा में निपजे सार।
सत्तर लाख फौजदल प्यादा, उभा करे पुकार ऐ॥ मने० ९ ॥
करे पुकार कोई नहिं तेरा, अपने अपने काज।
मामा तेरा देख भरथरी, तज्यो उजीणी राज रे॥ गोपी० १०॥
तजी उजीणी भरथरी ऐ, आया गोरखनाथ।
पहले राज कियो पृथवी पर, गया गुरूके साथ ऐ॥ मने० ११॥
गुरु देवन का देव है रे, धरो उसीका ध्यान।
आप तिरे फिर तुझे तिरावे, गावे वेद पुराण रे॥ गोपी० १२॥

[माँकी आज्ञासे गोपीचन्द साधु होकर रनिवासमें अपनी रानियोंको माता कहकर भिक्षा माँगता है। फिर अपनी बहिन चन्द्रावलीके घरपर भिक्षाके लिये पहुँचता है।]

(५०)

सुन बहन सयानी, भिक्षा घालोनी ऊभो बारणें।
गोपीचन्द बीरा, जोगी हुयो रे काईं कारणें॥ टेर॥
कहाँसे लीन्ही सैली सींगी, कहाँ फड़ाया कान।
बारह बरस की ऊमर तेरी, तूँ लड़का नादान रे॥ गोपी० १॥
जनम दियो मैणावती ऐ, मैं किस विधि करूँ पुकार।
मूँड मुँडायो महलमें ऐ, मने कियो गुरू के लार ऐ॥ सुन० २॥
मरज्यो माँ मैणावती रे, तुझे सिखायो ज्ञान।
दूजा मरज्यो सत्गुरु थारा, फाड्या छुरीसे कान रे॥ गोपी० ३॥
कान फड़ाया मुदरा डाली, कर कर भगवाँ भेष।
माता गुरुने दोष नहीं है, लिख्या विधाता लेख ऐ॥ सुन० ४॥
क्या विधाता लिख दई रे, संगति का उपदेश।
शहर बंगालो सभी डुबोयो, कर कर भगवाँ भेष रे॥ गोपी० ५॥
भगवाँ में भगवान् बसे ऐ, गुरु देवनके देव।
आप तिरे और तुझे तिरावे, करूँ उसीकी सेव ऐ॥ सुन० ६॥
तेरे गुरू के आग लगाऊँ, उलटी दीन्ही सीख।
राज छोड़कर भयो मसाणी, घर घर माँगे भीख रे॥ गोपी० ७॥
माँगी भीख बारणें तेरे, दिवी गुरूनें गाल।
फिर नहिं आवूँ द्वारे तेरे, उठे बदनमें झाल ऐ॥ सुन० ८॥

शिक्षाप्रद लोकगीत

(५१)

ससुरजी ने तीरथ मान लो ये हरिकी प्यारी।
थांरी सासूजी ने गंगा समान समझ हरिकी प्यारी,
जासौं मुकती होय थांरी॥ टेर॥
जेठ पिता सम मान लो ये हरिकी प्यारी।
थांरी जिठाणी मात समान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ १ ॥

पति परमेश्वर मान लो ये हरिकी प्यारी।
वांरो हुकम सीसपर राख समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ २ ॥
देवर पुत्र ज्यों मान लो ये हरिकी प्यारी।
थांरी देवरानी बहन समान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ३ ॥
नणदी रो आदर राखज्यो ये हरिकी प्यारी।
वांरो करो सदा सम्मान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ४ ॥
लाज सरम मत छोड़ज्यो ये हरिकी प्यारी।
थे तो करज्यो मत अभिमान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ५ ॥
घरको कारज खुद करो ये हरिकी प्यारी।
थे तो छोड़ो सुख आराम समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ६ ॥
निंदा चुगली मत करो ये हरिकी प्यारी।
थे तो करज्यो हरि गुणगान समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ७ ॥
गीता रामायण बांचल्यो ये हरिकी प्यारी।
थे तो जपो सदा हरि नाम समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ८ ॥
दोय दोय कुलने तारज्यो ये हरिकी प्यारी।
थे तो जास्यो प्रभुके धाम समझ हरिकी प्यारी॥ जासौं॥ ९ ॥

पतिव्रत धर्म

(५२)

सुनो ग्यान बड़े कुल वाली ये, थे धरम सनातन पाल ज्यो॥ टेर॥
बहनां सति अनसूया बन ज्यो, अतिथी ने भीच्छा घाल ज्यो॥ १ ॥
बहनां सीता सतवन्ती बन ज्यो, दुरजन पर धूली डाल ज्यो॥ २ ॥
बहनां सति सावित्री बन ज्यो, पिव की जम बाधा टाल ज्यो॥ ३ ॥
बहनां सति दमयन्ती बन ज्यो, आपत में शील सँभाल ज्यो॥ ४ ॥
बहनां सति पारबती बन ज्यो, अपनो प्रन कर मत टाल ज्यो॥ ५ ॥
बहनां दरजी नाथू गावे, पिव की आग्या में चाल ज्यो॥ ६ ॥

बहनाने चेतावणी

(५३)

बहनां सुणो तो सरी हे बहनां सुणो तो सरी।
रामजी दयालजी ने क्यूँ बिसरी॥ टेर॥
घर में बाताँ बाहर बाताँ, बाताँ पाणी जाताँ।
आँ बाताँ में नफो नहीं है जम मारे ला लातां॥ १ ॥
खावणने खाथी घणी थे, राम भजन में माठी।
जँवायाँरा गीत गावती फिरो शहर में नाठी॥ २ ॥
पाँच सात तो भाई भेला कैसा लागे प्यारा।
जे बायाँरो सारो होवे, कर दे न्यारा न्यारा॥ ३ ॥
परमारथने पतली पोवे, घरका ताईं जाडी।
सायबके दरबार में थाँरी, कैयां आसी आडी॥ ४ ॥
चोखा चावल मोठ बाजरी, घर में आघा मेले।
सुलियो धान घणां काँकरा, माँगणियाँ ने ठेले॥ ५ ॥
ओढ़ पहर कर एडी निरखे, कुण बायांरी पड़ दे।
जे बायाँरो हुकम चले तो, चोटी फुर्र फुर्र कर दे॥ ६ ॥
बांयाँरी निन्दा मत कर ज्यो, बायाँ सबकी मायाँ।
अमर भई है मीराँ बाई, गिरधर का गुण गायाँ॥ ७ ॥

क्रूर स्वभावकी फूहड़ नारी

(५४)

घर भून्डो लागे फूहड़ नारी फिरे आँगणे॥ टेर॥
साँझ सबेरे झगड़ो करती दोफाराँ लग सोती।
बासी मुँडे करे कलेवो, पीछें मुखड़ो धोती॥ १ ॥
कर तकरार पती पर कड़के, जैसे काली नागण।
सीख न किसकी सुणे शङ्खणी, ऐसी है मँद भागण॥ २ ॥

बड़ी कठोर दया नहिं मनमें, रहे न किसके सारे।
रोटी करती टाबरियाँ ने, पटक पटक कर मारे॥ ३ ॥
घर में बैठ्याँ मन नहिं लागे, दिन भर करे हताई।
बास गल्याँ मे फिरे भटकती, निन्दा करे पराई॥ ४ ॥
दोउ हाथाँ सू माथो कुचरे, चट चट जूँवाँ मारे।
ओढ़णियूँ लटकायाँ चाले, फिरती डगर बुहारे॥ ५ ॥
हरदम मुँह फुलायो राखे, कदे न मीठी बोले।
बड़े बुढ़े की काँण न माने, बदन उघाड़्याँ डोले॥ ६ ॥
रोवे तो सब गांव सुणावे, हड़ हड़ हड़ हड़ हांसे।
मैली घणीं कुचैली रहवे, तनका कपड़ा बाँसे॥ ७ ॥
ऐसी नार मिले कोई नरनें, हरिने तुरत पुकारो।
दीनानाथ दया कर म्हारो, बेड़ो पार उतारो॥ ८ ॥

अशिक्षित फूहड़ नारी

(५५)

फूहड़ आई घर में नार, धन्य भाग थारा भरतार॥
घर की नहिं है सार संभाल पड़्या उघाड़ा सारा माल॥
बिखर्‌या बरतण बिखरी दाल, प्रिन्डे आगें जूठा थाल॥
उड़ उड़ काग बखेरे जूठ, हान्डी घड़ा रया सब फूट॥
उलटो पीढ़ो आंगण बीच, च्यारूँ कूँटाँ मचरयो कीच॥
फिर फिर चूसा आटो खाय, पापड़ बड़ी पगां में आय॥
हरदम घर का खुला किंवाड़ कुत्ता बिल्ली करे बिगाड़॥
फूहड़ आंगण रही बुहार, कीड़्याँ मारे बेसुमार॥
इतको कूड़ो इत उड़ आय, घर ही को घर में रह जाय॥
फूहड़ पीसे आटो दाल, ईल्याँ घुन को आयो काल॥
अध छाण्यो ही, आटो घोल, आधो दियो जमीं पर ढ़ोल॥
फूहड़ चूल्हो रही जलाय, लकड़ी पहली ना झड़काय॥

चूल्हे मांही दे सरकाय, जीव जन्तु सारा जल जाय॥
रोटी देर लगाय करी, अध कच्ची अध जली धरी॥
मुख में ले तो फिर फिर आय, खावणियूँ रीसां बल जाय॥
फूहड़ तूं हरि नाम पुकार, थाँरी आदत तुहीं सुधार॥
तिरज्यासी थाँरो भरतार, तिरज्यासी सारो परिवार॥

(५६)

म्हारा भाइ रे मालक जी ने भूलो मती रे॥ टेर॥
लाधग्यो कलजुग रो मोको, ओ अवसर मिलग्यो है चोखो,
फेर रह ज्यावे लो धोखो, छोड़द्यो चिलम बिड़ी होको,
बीरा खोटां की संगत कबूलो मती रे॥ १ ॥
कहावो बड़ा धरांरा पूत, बिगड़ग्या कर खोटी करतूत,
बणोला आं लखणा सूं भूत, पड़ेला जम राजा का जूत,
बीरा लख चौरासी में झूलो मती रे॥ २ ॥
चढ़ाकर दारूड़ी की घूंट, बण्योड़ा मतवाला ज्यूं ऊँट,
हाँडता फिर रया च्यारूँ कूंट, जाण कर हिया गया क्यूं फूट,
बीरा खोटा कामण कर फूलो मती रे॥ ३ ॥
एक दिन जास्यो छोड़ मुकाम, छूटसी नेतागिरी तमाम,
न आवे सरपंचाई काम, चालसी संग राम को नाम,
बीरा राम भजन करो रूलो मती रे॥ ४ ॥

बूढ़ापो

(५७)

बूढ़ापा बैरी किस बिध होसी थारो छूटबो॥ टेर॥
नैणासूं अब सूझे नाहीं दाँत भया सब खोला।
नाक झरे सुणबा को घाटो अे कांई दुखड़ा थोड़ा रे॥ बू०॥ १ ॥
डगमग डगमग नाड़ी हाले, लेई हाथ में गेडी।
गोडा दुखे चल्यो न जावे, कमर हो गई टेढ़ी रे॥ बू०॥ २ ॥

ठण्डी रोटी गले न उतरे, नरम खीचड़ी भावे।
खारो खाटो दाय न आवे, मीठा पर मन जावे रे॥ बू० ॥ ३ ॥
बेटा पोता कयो न माने, नार्‌याँ का भरमाया।
घालाँ जी सो खाले डोकरा, काईं कमाकर लाया रे॥ बू० ॥ ४ ॥
बहुवां छोड़्यो काँण कायदो, कद मरसी ओ डाकी।
खाय सकां नहिं पहर सकां नहिं, हीड़ा कर कर थाकी रे॥ बू० ॥ ५ ॥
सन्त सुजाण देत है हेला, सुन लीजो सब लोग।
ओ संसार स्वपन की माया, मिथ्या है सब भोग रे॥ बू० ॥ ६ ॥

ममताको त्याग

(५८)

छोड़ मन तूँ मेरा मेरा, अंतमें कोई नहीं तेरा॥ टेर ॥
धन कारन भटक्यो फिर्‌यो, रच्या नया नित ढंग।
ढूँढ़ ढूँढ़ कर पाप कमाया, चली न कौड़ी संग।
हो गया मालिक बहुतेरा॥ १ ॥
टेढ़ी बाँधी पागड़ी, बन्यो छबीलो छैल।
धरतीपर पग गिन गिन मेल्या, मौत पड़ी है गैल।
बखेर्‌या हाड हाड तेरा॥ २ ॥
साबुन से नित न्हाइयो, अतर फुलेल लगाय।
सजी सजाई पुतली थारी, पड़ी मसाणाँ जाय।
जलाकर किया भसम ढेरा॥ ३ ॥
मदमातो करड़ो रयो, राता राख्या नैण।
आयाँ ने आदर नहिं दीन्हो, मुख नहिं मीठा बैण।
अंत जमदूत आय घेरा॥ ४ ॥
पर धन पर नारी तकी, पर चरचा सूँ हेत।
पाप पोट माथेपर मेली, मूरख रयो अचेत।
हुया फेर नरकाँ में डेरा॥ ५ ॥

राम नाम लीन्हो नहीं, सतसँग सूँ नहिं नेह।
जहर पियो इमरत ने छोड़्यो, अंत पड़ी मुख खेह।
स्वास सब व्यर्थ गया तेरा॥ ६ ॥
हूँ हूँ करतो ही मर्‌यो, गयो जमारो हार।
दुरलभ मानुष देह गमाई, करम किया बदकार।
पड़्यो फिर जनम मरण फेरा॥ ७ ॥
काम क्रोध मद लोभ ने, तजकर जलदी चेत।
मैं मेरे की छोड़ कलपना, कर ले हरि सूँ हेत।
जनम यह सफल होय तेरा॥ ८ ॥

कलजुग रो प्रभाव

(५९)

तर्ज—धमाल

कलजुग हाका करतो आवे रे, चौड़े धाड़े।
कलजुग ढोल बजातो आवे रे, चौड़े धाड़े॥ टेर ॥
सतजुग श्रेता द्वापर युगकी, कूच करी ठकुराई।
आँख खोल कर देखो भाइड़ाँ कलजुग की चतुराई॥
सगला एकल कुण्डे न्हावे रे॥ १ ॥
नार्‌याँ को नारी पण उठग्यो, मरदाँकी मरदाई।
हिन्दू बंस मिटावन लाग्या बणे नतीजो काईं॥
सगला होडाहोड मचावे रे॥ २ ॥
छोड्या च्यारूँ वरण आपरी, रोट्याँ रो रुजगार।
भाषा छोड़ी भेष छोड्या, बेट्याँ रो व्यवहार॥
सगला भेला मिलकर खावे रे॥ चौड़े० ॥ ३ ॥
चोटी छोड़ी धोती छोड़ी, नेक्टायाँ लटकावे।
खड़्या खड़्या भीतां पर मूते, जूता पहर्‌याँ खावे॥
पूरब छोड्यो पश्चिम जावे रे॥ चौड़े० ॥ ४ ॥

आपस में मुंडे नहिं बोले, माँका जाया भाई।
झूठा झूठा करे मुकदमा, राज कचेड़्याँ माही॥
वे तो खुल्ली रिस्वत खावे रे॥ चौड़े० ॥ ५ ॥
बहुराण्याँ बेटाँ रे सँग में, कलबाँ माहीं डोले।
काम काज की कहवे तो सासू से करड़ी बोले॥
बेटो बाप ने धमकावे रे॥ चौड़े० ॥ ६ ॥
कामी चोर लबारी मँगता, कपटी भेष बणावे।
सन्त जाण भोला नर-नारी चुंगल में फँस ज्यावे।
पैसा खावे धरम गमावे रे॥ चौड़े॥
रूपियाँ खातर मुंडो बावे रे॥ चौड़े॥ ७ ॥
घर-ग्रस्थी भी चेल्याँ मूँडे, जोगी नाम धरावे।
अपनी ही पूजा करवावे, ईश्वर नाम उठावे॥
दौड़्या नरकाँ माहीं जावे रे॥ चौड़े० ॥ ८ ॥
बड़ो एक गुण कलजुग माहीं, बड़ भागी लख पावे।
राम-नाम जपणे सूँ प्राणी, भव सागर तिरजावे॥
तुलसी रामायण में गावे रे॥ चौड़े० ॥ ९ ॥

नशो करणे सूँ पतन

(६०)

तर्ज—पनजी

नशा-नशा में नसाँ काढ़ली, पूँजी खूटी रे,
लत नहिं छूटी रे॥ टेर॥
निकमी बातां करे नशे में, बक-बक बोले झूठी रे।
लोग बिगाड़न काज बतावे, शिवजी री बूँटी रे॥ १ ॥
गाँजा चड़स तमाखू बीड़ी, और दारू की घूँटी रे।
लोक-लाज-मरजादा सारी, टाँगी है खूँटी रे॥ २ ॥
जाति-पाँति कुल धरम बिगाड़्यो, इज्जत गई सब लूंटी रे।
कर्‌यो देश को नाश, काँण बड़काँ री टूटी रे॥ ३ ॥

हँसता-हँसता गले बाँध ली, घोर निकम्मी घूँटी रे।
दुख पावे रोवे नहिं छोड़े, पिवे अपूठी रे॥ ४ ॥
हुयो देश बदनाम नशे सूँ, हाय हिये की फूटी रे।
मोहन कहे सुणे नहिं माने, दुनियाँ झूठी रे॥ ५ ॥

चाय पीवणी खराब

(६१)

कलजुग आयो कृष्णजी, जीव हुया लाचार,
दूध छोड़ कर चाय की जगत करे मनुहार।
साध पिवे गृस्थी पिवे, ब्राहमण पिवे चमार,
भेड़ चालकी चलणसें भिसल गयो संसार।
च्याරूँ बरण भिसलग्या जगमें सगला ने जूठण खुवाई।
हे चायड़ती जुलमण, कुण तन्ने मूण्डे लगाई॥
कलयुग की घूंटी, कुण तन्ने मुण्डे लगाई॥ टेर॥
बोल— सूरज उगतां छोरा छोरी, कूक रया है चाय चाय,
बुढ़लती दादी गरलावे, हाय मरी रे चाय चाय,
घर को मालिक भी अरड़ावे, वो भी माँगे चाय चाय,
भर भर चीणमटी का भाँडा धरे पेटमें धाँय धाँय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
हुया नशेड़ी घरका सारा, रामकथा नहीं भाई॥ हे चायड़ती॥ १ ॥
बोल— घर पर नाई करे हजामत, वो भी कूके चाय चाय,
कपड़ा सींवण दरजी आवे, तो गरलावे चाय चाय,
चिणबानें चेजारो आवे, बाको फाड़े चाय चाय,
जाग्रण जम्मा रातीजोगा, पटकी पड़ गइ चाय चाय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
गाँवाँरा रजपूत चौधरी, छोड़ी है दूध मलाई॥ हे चायड़ती॥ २ ॥

बोल— स्टेशन पर गाड़ी में बैठो, शोर मच्यो है चाय चाय,
मोटर के अड्डे पर जावो, तो चिरलावे चाय चाय,
जाय धरमशालामें ठहरो तो गरलावे, चाय चाय,
देश विदेश कमाबा जावो, दे-किलकार्‌याँ चाय चाय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
हरिचरचा नहिं पड़े कानमें भारी या आफत आई॥ हे चायड़ती॥ ३ ॥
बोल— घर पर आय बटाऊ ठहरे, लाय उकालो चाय चाय,
छोरा छोरी ने परणावो, तो भी बालो चाय चाय,
ओसर मोसर टाणाँ काढो, लागे चुंगी चाय चाय,
धोली गऊ को दूध बिगाड़्यो गंदलो कर दियो हाय हाय,
शिवशंकर कह सुण पारवती, हरिनाम चितार बिसार मती, जी!
छोड़ो नशा हरी भज लावा लूंटो बहन मेरा भाई, ॥ हे चायड़ती॥ ४ ॥

तमाखू पीवणूं खराब

(६२)

राम भजनसूँ दूर हटावे, पीढ़याँ के दाग लगावे रे,
सुण भोला जिवड़ा, क्यांने तमाखूड़ी खावे,
भूल्योड़ा प्राणी क्यांने०॥ टेर॥
कोई सुरड़ बिड़ी सिगरेट ढेर कर देवे,
कोइ दाँतण कर कर सूंघ सूंघ सुख लेवे,
कोइ होटां तले दबाय थूक भर देवे,
कोइ चिलम चूंसतो धुवाँ धोर कर देवे,
बात करे तो मुंडो बासे, तन माहीं दुरगन्ध आवे रे॥ सुण०॥ १ ॥
कोई होको लेकर घुरड़ घुरड़ घुररावे,
सुण भला आदमी दूर दूर भग ज्यावे,
कोइ झाड़ चिलमने दूजी और भरावे,
धरणी पर छोटा जीव जन्तु जलज्यावे,
पाप करम पल्ले बँध ज्यावे, नरकांमें गोता खावे रे॥ सुण०॥ २ ॥

कोइ लाय तमाखू ऊँखल मायँ कुटावे,
कोइ बिना तमाखू लौट पलेटा खावे,
कोइ भजन गाय गाँजे की लपट लगावे,
टाबरिया बिगड़े वांरो मन ललचावे,
कून्डा भर भर कफका गेरे, आखी रात दुख पावे रे॥ सुण०॥ ३॥
कोई पान मसालो नाम लेय गटकावे,
मुख ठण्डो देख सुगन्धी में फँस ज्यावे,
केन्सर को रोगी वणे दृष्टि नहिं जावे,
उलटो होवे परिणाम समझ नहीं पावे,
कहवे तो रींसाँ बलज्यावे, भूल्याँने संत समझावे रे॥ सुण०॥ ४॥
दोउ हाथ जोड़कर सेवक अरज सुणावे,
झट छोड़ तमाखू मुक्त हुयो तूँ चावे,
नरलोक बिगाड़े अरु परलोक नशावे,
यो मिनख जमारो बार बार नहिं पावे,
तज दुर्व्यसन भजन कर भाया, जनम सुफल होय ज्यावे रे॥ सुण०॥ ५॥

उठो! जागो!

(६३)

तर्ज—लोक-गीत

उठ जाग मुसाफिर जाग रे, काया नगरी में लागी आग रे॥ १ ॥
तूँ तो सूत्यो है कैयां निसंक रे, कोई राजा बच्यो नहिं रंक रे॥ २ ॥
तूँ तो चेत बटाऊड़ा बीर रे, थारो छिन छिन छीजे सरीर रे॥ ३ ॥
थारा गिणती रा आवे है स्वास रे, थारी पल भर की नहिं आस रे॥ ४ ॥
थारा होरया बाल सफेद रे, तन्ने देख्याँ ही आवे है खेद रे॥ ५ ॥
तूँ तो जगतपिता रो है अंस रे, तूँ तो मत बण रावण कंस रे॥ ६ ॥
धन जोड़े है लाख किरोड़ रे, काईं औराँ री कररयो होड़ रे॥ ७ ॥
तूँ तो जावेलो सब कुछ छोड़ रे, थारा जायोड़ा फोड़ेला भोड रे॥ ८ ॥
बेटा पोटा मूँडालेसी मूँछ रे, थोड़ा आँसूड़ा लेसी पूँछ रे॥ ९ ॥

वे तो दिन दस रोवेला रोज रे, पीछे बैठ्या उडासी मौज रे॥ १० ॥
घर रोवेली बिधवा नार रे, हरि भजसी तो बेड़ा पार रे॥ ११ ॥
तूँ तो चेत अज्ञानी जीव रे, तन्ने याद करे थारो पीव रे॥ १२ ॥
तन्ने हेला मारे है सन्त रे, पढ़ गीता रामायण ग्रन्थ रे॥ १३ ॥
थारो लोक बणे परलोक रे, सारा मिट ज्यावे दुख शोक रे॥ १४ ॥
मत होवे तूँ नीत हराम रे, मुख बोल हरीजी रो नाम रे॥ १५ ॥

चेतावनी

(६४)

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला, भज मुरली मनोहर नन्दलाला॥ टेर॥
थारो मुन्डो, थारो मुन्डो, भजन बिना भुन्डो,
बटाउड़ा सुणरे, थारो हरि बिन नेड़ो कुण रे॥ भज॥ १ ॥
थारी आँख्याँ, थारी आँख्याँ मे, बींठ करसी माख्याँ, बटाउड़ा०॥ २ ॥
तूं तो गोरो, तूं तो गोरो, भजन बिना कोरो, बटाउड़ा०॥ ३ ॥
तूं तो मोटो, तूं तो मोटो, भजन बिना खोटो, ॥ बटाउड़ा०॥ ४ ॥
थारा बेटा, थारा बेटा, उतारलेसी हेटा, बटाउड़ा०॥ ५ ॥
थारा पोता, थारा पोता, राखेला तन्ने रोता, बटाउड़ा०॥ ६ ॥
थारे घरकी, थारे घरकी, मराताहीं दूर सरकी, बटाउड़ा०॥ ७ ॥
थारी कूंची, थारी कूंची, टांग्योड़ी रहसी ऊँची, बटाउड़ा०॥ ८ ॥
थारी हेली, थारी हेली, हो ज्यासी सब भेली, बटाउड़ा०॥ ९ ॥
क्यूं फूल्यो, क्यूं फूल्यो, तूं रामजीने भूल्यो, बटाउड़ा०॥ १०॥
भज गोविन्द गोविन्द गोपाला, भज मुरलीमनोहर नन्दलाला॥

साठी बुद्धि नाठी

(६५)

तर्ज—थारे माथे नगारा बाजे

थारी साठी ऊमर नाठी क्यूं हुई रे,
नहीं लीन्हो तूं रामजी रो नाम॥ टेर॥

काईं बोले तूं मोटा मोटा बोलणां रे,
नहीं कीन्हों तू रामजी सूं प्यार॥ १ ॥
समझदारी में होयो फीरे बावलो रे,
बाजे लोगाँमें बड़ो हुँसियार॥ २ ॥
सारो खोयो जमारो सुख भोगमें रे,
क्यूं बढ़ायो तूं धरती रो भार॥ ३ ॥
चोखा लाग्या तन्ने तो रुपिया रोकड़ा रे,
फूटी कौड़ी चलेगी नहीं लार॥ ४ ॥
बांध लीन्ही पापाँरी मोटी पोटली रे,
जमरा दूतांरी खाणीं पड़सी मार॥ ५ ॥
थारा ऊग्या है बालण वाला रूँखड़ा रे,
बाट जोवे उठावण वाला च्यार॥ ६ ॥
अब तो पूंजी बटोरो हरिके नामकी रे,
थारो मुंडो है मुकती रो द्वार॥ ७ ॥

कूच करनेकी तैयारी

(६६)

देखांला भाईड़ा कैयाँ नट ज्यावेलो।
पलमें टिकट थांरो कट ज्यावेलो॥ टेर॥
चाल कथामें कहे काम करूँ, छोरी छोरांरो मैं तो पेट भरूँ।
काल मुन्डो फाड़ राख्यो गिट ज्यावेलो॥ पलमें०॥
मोटा-मोटा सोटा लेकर आसी जमराज,
रामजी नें भजतां थांने पहली आई लाज।
देखां अब कैयाँ पाछो हट ज्यावेलो॥ पलमें०॥
टेढ़ो-मेढ़ो चाले मनमें राखे है मरोड़,
गरीबाँ सूँ बाता करतां लेवे मुन्डो मोड़।
सारो ही घमण्ड थारो घट ज्यावेलो॥ पलमें०॥

उठो रे भाईड़ाँ अब तो भजन करो,
रामजीरो नाम थे तो हिरदेमें धरो।
ऐयाँ तो कर्याँसूँ सोदो पट ज्यावेलो॥ पलमें०॥

औराँने मत देखो

(६७)

दूजे की काईं सोचे म्हारा जिवड़ा, क्यूं नहिं सोचे थारी रे।
क्याँ ताईं रे इण जगमें आयो, क्यूं तन्नें मिनख बणायो रे॥ टेर॥
मोह मायामें आँधो होग्यो, कियां थारी पार लगासी रे।
डूंगर ऊपर बलती दीखे, पग बलती नहिं दीखे रे॥ १॥
पल छिन की तेरी खबर नहीं है, काईं मनसूबा बाँधे रे।
करणू है सो अबही कर ले काल खड्यो सिर साँधे रे॥ २॥
करस्याँ करस्याँ कई नर करग्या, मनड़ेरी मनमें लेग्या रे।
जो करग्या सो तिरग्या प्राणी, मनसोबी तो डूब्या रे॥ ३॥
आछा आछा करम कमाले, जीवन सुफल बणाले रे।
नहिं तो थांरा कुकरम जमड़ा, दे दे जूता मारे रे॥ ४॥
ओम की तो याही वीनती, नाम हरीका गाले रे।
वही तुम्हारा जीवन साथी, अमरलोक ले चाले रे॥ ५॥

मिनखा जनम

(६८)

मानखो जमारो बन्दा एलो मत खोवे,
सुकरित कर ले जमारामें।
पापी के मुखसूं राम कोनी निकले,
केसर ढुल गई गारा में॥ टेर॥
भैंस पदमणीनें गहणूँ पहरायो,
काईं जाणें नोसर हाराने।
पहर कोनी जाणे भोली ओढ़ कोनी जाणे,
कूद पूड़ी वा बाड़ा में॥ १॥

सोने के थाल में सूरड़ीने पुरस्यो,
काईं जाणे जीमण जिमाराने।
जीम कोनी जाणे वातो स्वाद कोनी जाणे,
जनम गमायो गन्दीवाड़ा में॥ २॥
काँच के महल में कुत्तीने पोढ़ाई,
काईं जाणे रंग चोबारा नें।
पोढ़ कोनी जाणे वातो सोय कोनी जाणें,
भुसती फिरे गलियारां में॥ ३॥
हीरा ले मूरख ने दीन्हा, दलबा लाग्यो साराँने।
हीराँ की पारख जँवरी जाणें,
काईं जाणे मुरख गिंवारा ने॥ ४॥
अमरितनाथ अमर भया जोगी, जार गया काचे पारानें।
भानीनाथ शरण सतगुरु की, जीतो दसूं दुवारां ने॥ ५॥

छल बाजी छोड़ो

(६९)

छल बाजी करणीं छोड़ो जी थे मिनख कहावो मोटा।
कपटाई करणीं छोड़ो जी थे मिनख कहावो मोटा।
सुणो नहीं संतांरी बाणीं लेवो नींद का झोटा जी॥ छल०॥ टेर॥
जो कहवे हरि भजन करन की, भाग्य बताओ खोटा।
पोता पोतीनें परणाद्यूँ टाबर रहग्या छोटा जी॥ छल०॥ १॥
लुक छिप करके पाप कमाओ लेवो धरम का ओटा।
इक दिन फूटे घड़ो पाप रो, सिर पर बाजे सोटा जी॥ छल०॥ २॥
औरांने तो मुरख बताओ, आप अकल रा पोटा।
स्वास स्वास में ऊमर घट रहि, पल पल पड़रया टोटाजी॥ छल०॥ ३॥
तोथी बातां करो निकम्मी, झूठ गुड़ावो गोटा।
इण लखणां सूं भला न बाजो, बणे नतीजा खोटा॥ छल०॥ ४॥
सतसंगत कर राम नाम का, भरल्यो भीतर कोठा।
अमरापुर में वास करो थे, फेर न आओ ओठा॥ छल०॥ ५॥

(७०)

ममता करे जगतमें प्राणी, रोवतड़ा मर जावे रे।
वे ही भूत प्रेत बणकर के, पाछा जगमें आवे रे॥ टेर ॥
आयो आज जनम दिन म्हारो, भोला भाई उछब मनावे रे।
ऊमर का दिन घट गया थारा, हरि गुण क्यूँ नहिं गावे रे॥ १ ॥
जोड़ लिया जो समँद जगत में, पल पल छूट्या जावे रे।
सेवा करे आस नहिं राखे, सहज पिंड छुट जावे रे॥ २ ॥
जबरदस्ती सूं छूट जाय तो, रोणु हि पाँती आवे रे।
जाण बूझ कर मन सूं छोड़े, तब ही मुकती पावे रे॥ ३ ॥
सदा रामजी अपणा साथी, वाँने जगत भुलावे रे।
दौड़त रात दिवस धन के हित, दौड़तड़ा गुड़जावे रे॥ ४ ॥
अपणा जगमें और न कोई, सांचा संत बतावे रे।
सांचे मन से सरण होय तो, झटपट पार लगावे॥ ५ ॥

मननें चेतावनी

(७१)

मना तनें मान्याँ सरसी रे।
हरि चरणाँ स्यूँ दूर पड़्यो कबलग दुख भरसी रे॥ टेर॥
भटकत भटकत जुग बीत्या, कद चेतो करसी रे।
बिना घणीं रे डाँगर ज्यूँ कितना दिन फिरसी रे॥ १ ॥
किताक दिन खर की ज्यूँ जगमें खोटो चरसी रे।
किताक दिन तूँ मन इन्दर्याँ रो पानी भरसी रे॥ २ ॥
किताक दिन तूँ भाँत भाँत रा, साँगा सजसी रे।
किताक दिन तू हरिने तज भूताँ ने भजसी रे॥ ३ ॥
किताक दिन तूँ पर सम्पति पर दारा तकसी रे।
किताक दिन छुपकर तूँ खुदनें खुद ही ठगसी रे॥ ४ ॥

राम बिमुख थारा धरम करम सब उलटा पड़सी रे।
पुन्य करताँ थारा पाप न खूटे, दिन दिन बढ़सी रे॥ ५ ॥
उलटो चाल्याँ गाँव न आवे, छेती पड़सी रे।
पूरब ने तूँ छोड़ पश्चिम जाय उतरसी रे॥ ६ ॥
घर घर भटक्याँ दाँत दिखायाँ, कुण दुख हरसी रे।
सीता पति रो शरणूँ ले ले, भवसूँ तरसी रे॥ ७ ॥

यो तन जासी

(७२)

यो तन जासी रे, दमड़ाँरा लोभी, तूं दुख पासी रे॥ टेर॥
कूड़ कपट कर माया जोड़े, कौड़ी ना सँग जासी रे।
आपो आप भुगतनी पड़सी, लख चौरासी रे॥ १ ॥
तूं तो चिन्ता करे रात दिन, टाबरिया के खासी रे।
दस दिन शोक मनायां पीछे मौज उड़ासी रे॥ २ ॥
खाय खाय नित पेट बिगाड़े, मारे पड़्यो उबासी रे।
काल बली सिर ऊपर नाचे, कररयो हाँसी रे॥ ३ ॥
लेज्यासी जमदूत क्रोध कर, घाल गले, बिच फांसी रे।
मार टाटड़ी गंजी करसी, कूण छुटासी रे॥ ४ ॥
हरि-भगती सत्सङ्गत सेवा, जोड़ असल धनरासी रे।
परमेश्वर ही नैया थारी, पार लगासी रे॥ ५ ॥

सिरपर मौत

(७३)

सिर मौत खड़ी है, सुमिरन तो करल्यो श्री भगवान को॥ टेर ॥
जैसे शीशी काँच की भाइ, वैसी नर थारी देह।
जतन करन्ता जावसी कोइ, हरि भज लावा लेह रे॥ १ ॥
सूतो सूतो क्या करे भाइ, सूताँ आवे नींद।
जम्म सिरहाने यूँ खड़ो ज्यूँ तोरण आयो बीन्द रे॥ २ ॥

माटी कहे कुम्हार कूं भाई तूं क्यूं रूँधे मोय।
एक दिन ऐसो आवसी जब, मैं रूँधूँगी तोय रे॥ ३ ॥
चलती चाकी देख के रे, दियो कबीरो रोय।
दोय पाटन के बीच में भाई साबत रयो न कोय रे॥ ४ ॥
संतदास संसार में रे, कइ गूधू कइ डोड।
डूबण को सांसो नहीं रे, नहीं तिरण को कोड रे॥ ५ ॥
कबिरा नोपत आपणी भाइ, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पट्टन यह गली कोइ, बहुरि न देखो आय रे॥ ६ ॥
क्या कहूँ कितनी कहूँ रे, कहा बजाऊँ ढ़ोल।
स्वासा बीती जात है कोइ, तीन लोक रो मोल रे॥ ७ ॥

जनम सी सोई मरसी

(७४)

जनम लियो वाने मरणो पडसी मौत नगारो सिर कूटे रे।
लाख उपाय करो मन कितना, बिना भजन नहिं छूटे रे॥ टेक॥
जमराजा रो आयो झूलरो, प्राण पलक में छूटे रे।
हिचकी हाल हचीड़ो लागे नाड़ियाँ तड़ातड़ तूटे रे॥ १ ॥
भाई बन्धु कुटुम्ब कबीलो रामजी रुठ्याँ सब रुठे रे।
एक पलक में प्रलय हो जासी, घाल रथी में तन कूटे रे॥ २ ॥
जीवड़ा ने लेय जमड़ा जब चाले, क्रोध कर कर कूटे रे।
गुरजांरी घमसाण मचावे, तुरत तालवो फूटे रे॥ ३ ॥
जीवड़ा ने जमड़ा नरक में डाले, कीड़ा कागला चूंटे रे।
भुगतेलो जीव भजन बिना भाई, जमड़ा जुगो जुग कूटे रे॥ ४ ॥
थारी चतुरायां में धूल पड़ेली करमड़ा काठा थारा फूटे रे।
करमां रो हींण कीचड़ में कलियो, बिना भजन नहिं छूटे रे॥ ५ ॥
राम सुमरि ले सुकरत कर ले, मोह बंधन तब टूटे रे।
कहत कबिर सुख चावे रे जीव तूं राम नाम धन लूंटे रे॥ ६ ॥

हरि गुण गाओ

(७५)

हरिका गुण गायले रे, जोगिया जब लग सुखी शरीर।
पीछें याद न आवसी रे, पींजर व्यापे पीर॥ टेर॥
भाग्य बड़ा म्हानें सन्त मिल्यारे, पड़्यो समँदमें सीर।
हंसा होय चुग लीजिये रे, नाम अमोलक हीर॥ १ ॥
अवसर दिन दिन बीत रयो रे ज्यूं अँजलीको नीर।
फेर न हंसो आवसी रे, मानसरोवर तीर॥ २ ॥
जोबन थकाँ भज लीजिये रे, देर न कीजे बीर।
चाल बुढ़ापो आवसी रे, रहे ना मनमें धीर॥ ३ ॥
सब देवन को देव रामजी, सब पीरन को पीर।
सहजराम भज लीजिये रे, हरि है सुखकी सीर॥ ४ ॥

भजन बिना मुक्ति नहीं

(७६)

भजन बिना मुकती नहिं पासी,
तूं ले ले हरिको नाम जनम तेरो सुफल होय जासी॥ टेर॥
भाग्य से मिनखां देह पाई,
तूं चेते है तो चेत फेर वा चौरासी आई॥ १ ॥
भजन को लाध गयो मौको,
तूँ चेतो कर सुरज्ञान अन्तमें रह जाय लो धोको॥ २ ॥
छोड़ दे झूठ कपट फन्दा,
तूँ काम क्रोध मद लोभ मोहमें मत होवे अन्धा॥ ३ ॥
समझ ले थोड़ी में सारी,
यो मतलब को संसार राम बिन कोई न हितकारी॥ ४ ॥

गोविन्दजीको स्मरण

(७७)

कर ले कर ले रे गोबिन्दाजीने याद, जिन्होंने थारी देह रची।
कर ले कर ले रे साँवरियाजीने याद, जिन्होंने थारी देह रची॥ टेर॥

भाई रे पाणी और पवनरो परकाश, भीतरमें अन्नकी जोत बनी।
भाई रे नखशिख दिया रे बणाय, मुखड़ेरे भीतर जीभ धरी॥ १ ॥
भाई रे इतनू काईं गरभ्यो रे गींवार, मायारी बाड़ी देख हरी।
भाई रे लाग्या लाग्या पान पान में फूल,
कुम्हलातां लागे एक घड़ी॥ २ ॥
भाई रे ऐरटियो तो चाले बारह मास,
इन्दरकी लागे एक झड़ी।
भाई रे चाले चाले बाल सुबाल,
झोलेकी चाले एक घड़ी॥ ३ ॥
भाई रे इतनूं कांई सूत्यो खूंटी तांण,
सिरहानें जमकी फौज खड़ी।
भाई रे भैरूँ भाटी माला री अरदास,
आज्यो जी म्हामें भीड़ पड़ी॥ ४ ॥

बड़ो भाग्य

(७८)

भाग्य बड़ा मिनखा तन पायो, हरि भज अवसर बीते रे॥ टेर॥
दिन रजनीं पखवाड़ो बीते, बरष महीनां बीते रे।
मिन्ट सेकिन्ड घड़ी पल बीते, आठ पहर यूँ बीते रे॥ १ ॥
बचपन बीत जवानी बीते, वृद्ध अवस्था बीते रे।
ग्रह नक्षत्र वार तिथि बीते, जोग लगन सब बीते रे॥ २ ॥
वरषा बीत शरद रितु बीते, ग्रीषम की रितु बीते रे।
होली बीत दिवाली बीते, पल पल ऊमर बीते रे॥ ३ ॥
बीतत बीतत बीत जायगी, रह जावोगे रीते रे।
फिर कब दाँव लगेगो प्राणी, बाजी क्यूँ नहिं जीते रे॥ ४ ॥

चोलो बिगड़ जासी

(७९)

मत लेय भजन में ओला, तेरा बिगड़ जायगा चोला॥ टेर॥
छोड़ चल्या थाँरा संग साथी घटग्या तेल बुझी ज्यों बाती।
तूँ काईं लिख दी ताम्बा पाती, स्वास जाय अनमोला॥ १ ॥
देखत सारो जगत नशावे, हेला मार सन्त समझावे।
जांण बूझ तूं होश भुलावे कान हुया क्यूं बोला॥ २ ॥
रात दिवस खच्चर ज्यूँ दौड़्यो, नातो नहीं हरीसूं जोड़्यो।
दिन छिपियाँ हो ज्यासी मोड़ो, केश होरया धोला॥ ३ ॥
मास दिवस बीते पखवाड़ो, बरषा बीत बीतरयो जाड़ो।
एक दिन काल मारसी धाड़ो, राम-भजन कर भोला॥ ४ ॥

बटाऊड़ो

(८०)

म्हाँने अबके बचा ले मेरी माय, बटाउड़ो आयो लेवणने॥ टेर॥
पाँच कोटड़ी दस दरवाजा, इण मन्दिरिये माँय।
लुकती छिपती मैं फिरूँ रे, किण बिध छोड़े बैरी नांय॥ १ ॥
हाथ जोड़ कन्या कहे रे, सुण मायड़ मेरी बात।
अबकि बटाउ ने पाछो कर दे, फेर चालूँगी वांरे साथ॥ २ ॥
हाथ जोड़ बुढ़िया कहे रे, सुणो बटाउ म्हारी बात।
म्हारी कन्या भोली भाली, अबके तो करद्यो गुनाह माफ॥ ३ ॥
सावणरा दिन सतरह बीत्या, आई तीज परभात।
रमण खेलणरी मन में रहगी, गुटियाँ सहेलड़्याँ रे साथ॥ ४ ॥
मात पिता अरु कुटुम कबीलो, फेर्‌यो सिर पर हाथ।
सात भायांरी बहन लाडली, कोई न चाल्यो वांरे साथ॥ ५ ॥

पिहरियेमें डेरा

(८१)

सुरता दिन दस पीहरिये में आय बालम ने कैयां भूल गई॥ टेर॥
सदा सँगाती ना रहे रे पीहरियेरा लोग।
पूरबली पुन्याई सेती, आन मिलायो है संजोग॥ बा० १॥

पीहरियो मतलब रो गरजी, स्वारथ रो संसार।
ना कोइ तेरा ना तूँ किसकी, झूठो क्यों कर रही प्यार॥ बा० २॥
गुरु गम गहणूँ पहर सुहागण, सज सोलह सिणगार।
बण ठण कर जब चलो ठाठ से, मिल ज्यासी थारो भरतार॥ बा० ३॥
होय अधीन मिलो प्रीतम से, धरो चरण में शीश।
'बालू' बालम समरथ तेरो, गुनाह करेगो बखशीश॥ बा० ४॥

जगत्-पिताकी विस्मृति

(८२)

जगत-पिता ने भूलग्या रे।
थारा जनम जनमरा साथी रे भाईड़ो।
परमपिताने भूलग्या रे॥ टेर॥
पारस पड़ियो आंगणे रे,
कोई आँधो ठौकर खावे रे भाईड़ो॥ जग० १॥
कस्तूरी मृग पासमें रे,
वो तो घास सूंघतो हाँडेरे भाईड़ो॥ जग० २॥
छणिक विषय-सुख कारणे रे,
वो तो कौटी जनम दुख भोगे रे भाईड़ो॥ जग० ३॥
जलमाहीं प्यासी माछली रे,
ज्याँने सुण सुण अचरज आवे रे भाईड़ो॥ जग० ४॥

जीवण जेवड़ी

(८३)

जीवण जेवड़ी रा सुख दुख आँटा, आयो ऊमर वालो नाको,
रे जिवड़ा दिन दिन होरयो पाको॥ टेर॥
बेटो कहायो बाप कहायो, और कहायो काको।
बाप कहा ले चाहे दादोजी कहा ले, बिगड़े एक दिन खाखो॥ १॥
तरुण भयो जब नारि पुरुष को बंधण जोड़्यो आखो।
घर ग्रस्थी की गाडी लगाय दी, दिन आँथे बेगा हाँको॥ २॥

सुख भोगे जद अकल सराहवे, म्हे ही धिकावाँ धाको।
दुख पावे जद राम के ऊपर, झूठो लगावे लाको॥ ३॥
रूपिया घणाँ कमाकर लावे, बेटो सुपातर म्हाँको।
हाँण हट्याँ मुण्डे नहिं बोले, दरड़े रे माहीं नाखो॥ ४॥
सुख दुख का दोय आँटा खोलो, एक तार कर राखो।
माधो कहे समता में रहकर, राम नाम मुख भाखो॥ ५॥

(८४)

हरि ही म्हारा हीरा पन्ना हरि ही माणक मोती॥ टेर॥
हरि ही मालक हरि ही पालक हरि ही घाले रोटी।
और आस सब झूठी जग की हरि की आसा मोटी॥ १॥
हरि का भजन करे सोइ जागे सारी दुनियाँ सोती।
हरि बिन मृतक समान जीव सब हरि ही जीवन जोती॥ २॥
हरि चरचा बिन और जगत की दूजी चरचा खोटी।
हरी भजन बिन सांति नहीं है जतन करो चाहे कोटी॥ ३॥
हरि ही मात पिता गुरु बंधू हरि ही नाती गोती।
ऊठत बैठत जागत सोवत हरि की सुरता होती॥ ४॥

नेकी करो

(८५)

हरि भज हरि भज हरि भज प्रानी, एक दिन पिंजरो पड़जासी।
नेकी करो बदी मत करना, घनी अनीती नहिं आछी॥ टेर॥
बागां बैठी मालिन बोली, योही बाग मेरो थिर रहसी।
हरि हरि कलियाँ चुन ले हे मालिन, फेर चुनणनें कब आसी॥ १॥
राज्य करन्तो राजा बोले, योही राज्य मेरो थिर रहसी।
न्याय नीति से चालो रे राजा फेर करणनें कब आसी॥ २॥
हाट्या बैठ्यो बनियूँ बोल्यो, याही हाट मेरी थिर रहसी।
पूरो पूरो तोल रे बणियाँ, फेर तोलणनें कब आसी॥ ३॥
वेद पढ़न्तो ब्राह्मण बोल्यो, यो पढ़णूँ मेरो थिर रहसी।
न्याय नीति से बांचो रे पन्डित, फेर बांचणने कब आसी॥ ४॥

क्या ले आयो क्या ले जासी, नेकी बदी तेरे सँग जासी।
रामानन्द का भणे रे कबीरा, खाली हाथाँ उठ जासी॥ ५ ॥

पशु-समान जीवन

(८६)

रामजी ने मुखाँ न गायो है, हरीजी ने हिये न भायो है।
सो नर पशू समान जिणांरो बुरो जमारो है॥ टेर ॥
हाथ से फेरी नहिं माला रे, हाथ से फेरी नहिं माला।
उस नर का वे हाथ कहीजे, बिरछन रा डाला॥ १ ॥
नैण से निरख्या नहिं नंदा रे, नैण से निरख्या नहिं नन्दा।
उस नरका वे नैण कहीजे, मौर पाँख चन्दा॥ २ ॥
कान से सुण्या न गुण कैसा रे, कान से सुण्या न गुण कैसा।
उस नर का वे कान कहीजे, कीड़ी बिल जैसा॥ ३ ॥
पाँव से गयो न गुरु पासा रे, पाँव से गयो न गुरु पासा।
उस नर का वे पाँव कहीजे, लकड़ दोय खासा॥ ४ ॥
रामजी रो सुमिरन नहिं करता रे, रामजी रो सुमिरन नहिं करता।
'रामदास' वह जीव जगत में, मुरदा सा फिरता॥ ५ ॥

सतगुरुका हेला

(८७)

राम सुमर ले रे मन गैला, एजी तनें सतगुरु देवे हेला॥ टेर॥
मोह माया में बिलम रह्यो है, मनमें बण रह्यो छेला।
सुख में तो थारे साथी घणाँ है, दुख में याद करे ला॥ राम० १॥
लोभ मोह की नदी चलत है, तामें फिसल पड़ेला।
भवसागर में बह्यो जात है, आपहि आप अकेला॥ राम० २॥
जैसे पत्र वृक्ष से टूटा, मिलना फेर दुहेला।
क्या जानूं कहाँ जाय पड़ेगा, लगे पवन का झेला॥ राम० ३॥
जैसे नाव समुद्र के ऊपर, दैव योग भया भेला।
मात पिता सुत कुटुम्ब कबीलो, तीरथ का सा मेला॥ राम० ४॥
सुकरित सौदा कर ले प्राणी, यह तेरे संग चले ला।
भज भगवान महा सुख पावे, माधव होय उजेला॥ राम० ५॥

राम-नामामृत

(८८)

रामजी रो नाम म्हांने, मीठो घणूं लागे रे॥ टेर ॥
रामजी रा मूँग चावल, रामजी री बाजरी।
रामजी रे घरको धन्धो, रामजी री हाजरी॥
रामजी री परसादी सूं, पाप सारा भागे रे॥ १ ॥
भाई बन्धु टाबर टोली, रामजी रा छोकरा।
माय बाप दादा दादी, रामजी रा डोकरा॥
सगला मिलकर रहवाँ म्हे तो, रामजी रे सागे रे॥ २ ॥
रामजी रा हेली नोहरा, रामजी रा झूँपड़ा।
रामजी रे खेत माहीं, रामजी रा रूँखड़ा॥
रामजी है पीछें म्हारे, रामजी है आगें रे॥ ३ ॥
रामजी रे घरकी पूँजी, रामजी लगावणियाँ।
रामजी रो लेणूँ देणूँ, रामजी चुकावणियाँ॥
शरणागत की चिन्ता सारी, रामजीनें लागे रे॥ ४ ॥
रामजी री लीला गावाँ, रामजी री कीरती।
बोले चाले दीखे सोई, रामजी री मूरती॥
रामजी रा सन्त आयाँ, भाग म्हारा जागे रे॥ ५ ॥

जीभड़ली

(८९)

तर्ज—धमाल

जुलमण जीभड़ली तूं राम-नामसूँ क्यूं उकतावे हे।
हात पगाँ सूं काम कराँ म्हे, भोजन दाँत चबावे हे।
तूँ तो बाइसा मुखमें बैठी, हुकम चलावे हे॥ जु० १॥
लपर छपर बढ़-बढ़कर बोले, बिरथा बात बणावे हे।
कर चुगली औराँरे घरमें, फूट घलावे हे॥ जु० २॥
सासू बहू जिठाण्या अरु देवराण्यांने झगड़ावे हे।
पिता पुत्र भायाँ-भायाँ में, राड़ करावे हे॥ जु० ३॥

झूठ कपट छल पर निन्दा कर, क्यूँ तूं पाप कमावे हे।
इमरत नाम छोड़ कर प्रभु को, क्यूं विष खावे हे॥ जु० ४॥
तूँ ले ज्यावे जनम-मरण में, तूँ ही मुकत करावे हे।
भजन कर्‌याँ सूँ अमरलोक में, तूँ पहुँचावे हे॥ जु० ५॥

जीभकी सफलता

(९०)

तेरे हाथों का धन्धा है हजार जीभ्यासे क्या काम करे॥ टेर॥
जीभ्या पूछे जीवसे रे क्या क्या करता काम।
मानव जनम वृथा क्यों खोवे, सुमिरन कर हरिका नाम॥ १॥
जीभ्यामें अमरित बसे रे जीभ्या ही में जहर।
जीभ करावे मित्रता रे जीभ करावे है बैर॥ २॥
जीभ्यामें रस भोग है रे, जीभ्या ही में जोग।
जीभ करे आरोग्यता रे, जीभ बढ़ावे है रोग॥ ३॥
सब रस है इस जीभ में रे, झूठा सकल शरीर।
जीभ मिलावे रामसूं रे, कह गए दास कबीर॥ ४॥

हरीको नाम

(९१)

सुवा भज ले हरिको नाम, नाम से तिर जासी।
सुवा जीवत आवे काम, मर्‌याँ रे थारे सँग जासी॥ टेर॥
सुवा कुण थारा माय र बाप, कूण थारो सँग साथी।
भाई धरती हमारी मात, धरम म्हारो सँग साथी॥ १॥
सुवा छोड़्या माय र बाप, छोड़ दिया सँग साथी।
भाई आयो हँस लो एक, अकेलो उड़ जासी॥ २॥
सुवा सत्‌गुरु देवे ज्ञान, कटे जमकी फाँसी।
भाई गावे दास कबीर, जनम थारो रँग जासी॥ ३॥

मीराँबाईजी

प्रार्थना

(९२)

प्रभु सुन लीज्यो बिनती मोरी, मैं शरण गहूँ प्रभु तोरी॥ टेर॥
तुम पतित अनेक उधारे, भवसागर पार उतारे।
मैं सबका नाम न जाणूं, पण कोइ कोइ नाम बखाणूं॥ १॥
अम्बरीष सुदामा नामा, तुम पहुँचाये निज धामा।
प्रह्लाद टेक तुम राखी, सब वेद पुराणां साखी॥ २॥
ध्रुव पांच बरषका बाला, तुम दरश दियो गोपाला।
अजामिलसे पापी भारी, तुम नारि अहिल्या तारी॥ ३॥
द्रौपदिकी लाज बचाई, पांडवनकी करी सहाई।
तुम गणिका पार लगाई, करमांकी खिचड़ी खाई॥ ४॥
नृप मोरध्वज हरिचन्दा, काट्या सबका दुख फन्दा।
तुम ग्राह हत्यो गज राख्यो, तुम अरजुनको रथ हाँक्यो॥ ५॥
तुम धनाका खेत निपाया, बिन बीज अन्न उपजाया।
कुबजा तुमरे रंग भीनी, नरसीकी हुण्डी लीन्ही॥ ६॥
सैना सदना रैदासा, तुम सबकी पूरी आशा।
शबरीके फल तुम खाये, तुम साग विदुर घर पाये॥ ७॥
रंका बंका बाजिन्दा, नानक दादू-सा बन्दा।
जन तुलसी सूर कबीरा, तुम हरी सकलकी पीरा॥ ८॥
रिषि मुनि तुमरो यश गावें, भक्तवत्सल नाम धरावें।
जन मीरांकी अब बारी, थे कठे रुक्या गिरधारी॥ ९॥

(९३)

मन वृन्दावन चाल बसो रे,
मान घटो चाहे लोग हँसो रे॥ टेर॥
गुरु बिन ज्ञान गंगा बिन तीरथ,
एकादशी बिन बरत किसो रे॥ १॥

बालूकी भींत अटारी पै चढबो,
ओछेकी प्रीत कटारीको मरबो॥ २ ॥
मन ना मिल्यो वासूं मिलबो किसो रे,
प्रीत लगी वासूं पड़दो किसो रे॥ ३ ॥
मीरांके प्रभु गिरधरनागर,
नन्द को छबीलो मेरे हिरदे बस्यो रे॥ ४ ॥

(९४)

थाँरे मुखड़ेरी माया लागी रे मोहन प्यारा
नटवर प्यारा, गिरधर प्यारा॥ टेर॥
मुखड़ो मैं जोयो थांरो, मनड़ो म्हारो हो गयो न्यारो,
यो जग म्हाने लागे खारो, म्हारी सोई सुरता जागी रे,
मोहन प्यारा, म्हारो मनड़ो भयो बैरागी रे मोहन प्यारा,
नटवर प्यारा गिरधर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ १ ॥
संसारीरो सुख झूठो, दुख बणकर आवे पूठो
थे प्रभुजी म्हांपर टूठो, प्रभु थां बिन नहिं निसतारो रे,
मोहन प्यारा स्वारथ रो सब संसारो रे मोहन प्यारा,
गिरधर प्यारा, नटवर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ २ ॥
नटवर नागर नन्दलाला, गिरधर गोविन्द गोपाला,
भगतांरा थे रखवाला, म्हारे हिवड़ेरा उजियाला रे,
मोहन प्यारा, मैं जपूं तिहारी माला रे मोहन प्यारा,
गिरधर प्यारा नटवर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ ३ ॥
मीरां दासी बड़ भागी, थांरे चरणामें लागी
झूठी जग माया त्यागी, प्रभु थे म्हारा प्राण अधारा रे,
मोहन प्यारा, मोहि एक भरौसा थांरा रे मोहन प्यारा,
गिरधर प्यारा, नटवर प्यारा॥ मुखड़ेरी० ॥ ४ ॥

(९५)

नहिं भावे थांरो देसड़लो रँगरुड़ो॥ टेर ॥
थाँरे देशामें राणा साध नहीं छे, लोग बसे सब कूड़ो॥ १ ॥

गहणां गांठा राणा हम सब त्याग्या, त्याग्यो है हाथांरो चूड़ो॥ २ ॥
काजल टीकी राणा हम सब त्याग्या, त्याग्यो है बाँधण जूड़ो॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, वर पायो छे म्हे तो रूड़ो॥ ४ ॥

(९६)

रे साँवलिया, साँवलिया, म्हारे आज रंगीली गणगौर छे जी॥ टेर॥
काली पीली झुकी बादली, मेघ घटा घनघोर छे जी॥ १ ॥
दादुर मोर पपैया बोले, कोयल कर रही शोर छे जी॥ २ ॥
रात अँधेरी डर म्हाँने लागे, चहुँ दिशि उठरया लोर छे जी॥ ३ ॥
दूरछे नगरियाँ सांकड़ी डगरियाँ बीच में घणाँ ठगचोर छे जी॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गिरधरनागर चरणकमल में जोर छे जी॥ ५ ॥

(९७)

मन सौं नाहीं बिसारूं थांने हरी।
चितसौं नाहीं उतारूँ थांने हरी॥ टेर॥
आवतां जावतां बिच मारगमें मिली अमोलख जड़ी॥ १ ॥
जल जमुना पाणीने जातां सिर पर मटकी धरी॥ २ ॥
आवतां जावतां बिनराबनमें चरण तुम्हारे पड़ी॥ ३ ॥
मोर मुकुट कुन्डल काननमें मुखपर मुरली धरी॥ ४ ॥
पीत पीताम्बर जरकस जामा करधनि रतनजड़ी॥ ५ ॥
मीराँके प्रभु गिरधर नागर विट्ठल वर नें वरी॥ ६ ॥

(९८)

बाला मैं बैरागण हूँगी।
जिण भेषां म्हारो सायब रीझे, सोई भेष धरूंगी॥ टेर ॥
शील संतोष धरूँ घट भीतर समता पकड़ रहूँगी।
जाको नाम निरंजन कहिये, ताको ध्यान धरूँगी॥ १ ॥
गुरु के ज्ञान रँगूं तन कपड़ा मन मुदरा पहनूंगी।
प्रेम प्रीतिसौं हरि गुण गावूँ चरणन लिपट रहूँगी॥ २ ॥
या तनकी मैं करूँ कींगरी, रसना नाम गहूँगी।
मीरांके प्रभु गिरधरनागर, साधाँ संग रहूंगी॥ ३ ॥

(९९)

रमैया बिन यो जिवड़ो दुख पावे।
कहो कुण धीर बँधावे॥ रमैया०॥ टेर॥
यो संसार कुबधरो भाँडो, साध सँगत नहिं भावे।
रामनामकी निन्दा ठाणे, करम हीं करम कमावे॥ १॥
राम नाम बिन मुकति न पावे, फिर चौरासी आवे।
भव-भव माहीं फिरे भटकतो, जमपुर बाँध्यो जावे॥ २॥
सत संगतिमें कबहुँ न जावे, मूरख जनम गमावे।
मीरां प्रभु गिरधरके शरणे, आय परमसुख पावे॥ ३॥

(१००)

बोल सूवा राम राम, बलि बलि जाऊँ रे॥ टेर॥
सोने केरी तार सूवा, पींजरो बणाऊँ रे,
पींजरे रे मोतीडाँरी, झालरी लगाऊँ रे॥ १॥
घिरत मिठाई मेवा, लापसी जिमाऊँ रे,
आँवलेरो रस तन्नें, घोल घोल पावूँ रे॥ २॥
चम्पा केरी डाल सूवा, हिंडोलो धलाऊँ रे,
हिंडोले बिठाके तोहे, हातसूं झुलाऊँ रे॥ ३॥
पगल्याँ रे माहीं थारे, पैंजण्याँ पहनाऊँ रे,
मीराँ प्रभु गिरधर के शरणे, आयां सुख पावूँ रे॥ ४॥

(१०१)

बोल मती बोल मती बोल मती रे,
हरि-नाम छोड़ दूजो नाम बोल मती रे॥ टेर॥
कन्द मिसरीरे स्वादने तजकर, नीमड़ेरो कड़वो रस घोल मती रे,
भाई तूमड़ेरो कड़वो रस घोल मती रे॥ १॥
हीरा मोती माणक तज कर, रतनाँ रे साथे चिरमी तोल मती रे॥ २॥
चान्द सूरजरे तेजने तजकर, जुगनूरे साथे प्रीति जोड़ मती रे॥ ३॥
मीराँ के प्रभु गिरधर भजतां, मनड़ा सैलानी म्हारा डोल मती रे॥ ४॥

(१०२)

आवोने पधारो जोशी आँगणियें विराजो,
खोल दिखावो थाँरी पोथी जी॥ टेर॥
सोना रूपा रो थानें पाटड़लो बिछाऊँ,
हीरा जड़ाऊँ थाँरी पोथी जी॥ १॥
खीर खाँडरा भोजन जिमाऊँ,
नूत जिमाऊँ थाँरा गोती जी॥ २॥
जरि कुँजरीरा बस्तर सिंवाऊँ,
दिखणाँ दिराऊँ थाँने मोती जी॥ ३॥
मीराँके प्रभु गिरधर नागर,
राम मिलन कब होसी जी॥ ४॥

(१०३)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई॥ टेर॥
जाके सिर मौर मुकुट मेरो पति सोई।
तात मात भ्रात बंधु आपणू न कोई॥ १॥
छाँड़ दई कुल की काण कहा करैगो कोई।
संतन ढ़िग बैठि बैठि लोक लाज खोई॥ २॥
चूनड़ी के टूक किये ओढ़ लीन्ही लोई।
मोती मूँगे उतार तुलसि माल पोई॥ ३॥
अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई।
अब तो वेलि फैल गई आनँद फल होई॥ ४॥
दूध की मथनियाँ मैं प्रेमसे बिलोई।
माखन माखन काढ़ लीन्हो छाछ पीवो कोई॥ ५॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
मीरा के गिरधर प्रभु तारो अब मोही॥ ६॥

(१०४)

कब आवोला सांवरिया म्हारे द्वार,
ऊभी जोऊँ बाटड़ली॥ टेर॥

मन मंदिरमें ग्यान बुहारी, देलीनी भरपूर।
पापको कचरो सोर बगायो, कर दीनो छे दूर॥
धोयो आँगणिये ने आँसूड़ा बहाय॥ १ ॥
पलकांपर पग मेलता प्रभु आज्यो हिवड़े बीच।
दरसण करस्यां भोग लगास्यां दोन्यू आँख्याँ मीच॥
थाँरी खूब करूँगी मनुहार॥ २ ॥
हिवड़े के सिंघासन ऊपर ध्यान बिछायो चीर।
सूनो आसन देखकर छूटेछे म्हारो धीर॥
थाँरो चोखोसो करूँगी सिणगार॥ ३ ॥
भोली सूरत साँवरी जी घूँघर वाला केस।
जादूगारी बाँसुरी जी नटवर थाँरो भेष॥
बेगा आवो जी ग्वालांरा सिरदार॥ ४ ॥
मैं छूं दासी आपकी जी राधा मेरो नाम।
रोम रोम थाँरे अरपण है जी सुन लीज्यो घनश्याम॥
बेगा आवो जी मीराँरा भरतार॥ ५ ॥

(१०५)

थाँरी साँवरी सूरत वालो भेष, बंशीवाला आज्यो म्हारे देश॥ टेर ॥
आवन सावन कह गया जी कर गया कौल अनेक।
गिणतां गिणतां घस गई म्हारी आँगलियाँ री रेख॥ १ ॥
कागज नाहीं स्याही नाहीं लेखन नहिं इण देश।
पंछीको परवेस नहीं मैं तो किणबिध लिखूं संदेश॥ २ ॥
साँवरे ने ढूँढण मैं गई जी कर जोगन को भेष।
ढूँढत ढूँढत जुग गया म्हारा धोला हो गया केश॥ ३ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी जी घूँघर वाला केश।
मीराँ ने गिरधर मिल्या जी कर नटवर को भेष॥ ४ ॥

(१०६)

राणांजी म्हाँने या बदनामी लागे मीठी॥ टेर ॥
थाँरे शहरको राणा लोग निमाणों, बात करेछे अणदीठी॥ १ ॥

हरि मंदिर को नेम है म्हारो, दुरजन लोगां म्हाँने दीठी॥ २ ॥
सास नणद म्हारी दोराणी जिठाणी, जल बल हो गइ अँगीठी॥ ३ ॥
थाँरो साँवरियो मीराँ म्हाँने बताओ, नहिं तो प्रीत थाँरी झूठी॥ ४ ॥
म्हारो साँवरियो राणा घट घट व्यापक, थाँरे हिये री काईं फूटी॥ ५ ॥
सांकड़ी सेर्‌यांमें म्हारा सतगुरु मिलिया, किण बिध फिरूँ मैं अपूठी॥ ६ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चढ़ गयो चोल मजीठी॥ ७ ॥

(१०७)

हे री मैं तो राम दिवानी मेरो दरद न जाने कोय।
दरद की मारी बन बन डोलूँ बैद मिल्यो नहिं कोय॥
सूली ऊपर सेज हमारी सोवणा किस बिध होय॥
गगन मँडल में सेज पिया की मिलणा किस बिध होय॥
घायल की गति घायल जाणे के जिण घायल होय॥
जोंहरी की गति जोंहरी जाणे के जिण जोंहरी होय॥
दरद की मारी बन बन डोलूँ बैद मिल्यो नहिं कोय॥
मीरा की प्रभु पीड़ मिटेगी, बैद साँवलियो होय॥

(१०८)

स्याम मने चाकर राखो जी।
चाकर रहसूं बाग लगासूं नित उठ दरसण पासूं।
वृन्दावन की कुँज गलिन में, थाँरी लीला गासूं॥ १ ॥
चाकरी में दरसण पाऊँ सुमिरण पाऊँ खरची।
भाव भक्ति जागीरी पाऊँ तीनूं बातां सरसी॥ २ ॥
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे गल वैजन्ती माला।
वृन्दावन में धेनु चरावे मोहन मुरलीवाला॥ ३ ॥
हरा हरा नित बाग लगाऊँ बिच बिच राखूँ क्यारी।
साँवरिया का दरसण पाऊँ पहर कसूमल सारी॥ ४ ॥
जोगी आया जोग करण कूँ तप करणें संन्यासी।
हरी भजन कूँ साधू आया वृन्दावन के बासी॥ ५ ॥
मीरा के प्रभु गहिर गँभीरा सदा रहो जी धीरा।
आधी रात प्रभु दरसण दीन्हे प्रेम नदी के तीरा॥ ६ ॥

(१०९)

नातो नाम को जी म्हाँसूं तनक न तोड़्यो जाय॥ टेर ॥
पाना ज्यूँ पीली पड़ी रे लोग कहे पिंड रोग।
छानें लाँघण म्हे किया रे राम मिलन के जोग॥ १ ॥
बाबल बैद बुलाइया रे पकड़ दिखाइ म्हारी बाँह।
मूरख बैद मरम नहिं जाणे कसक कलेजे माहँ॥ २ ॥
जा बैदा घर आपणे रे म्हारो नाम न लेय।
मैं तो दाझी बिरह की रे क्यूँ तूँ दारू देय॥ ३ ॥
माँस गल गल छीजिया रे करक रया गल आहि।
आँगलियाँ री मूँदड़ी म्हारे आवण लागी बाँहि॥ ४ ॥
रह रह पापी पपीहरा रे पिव को नाम न लेय।
जे कोइ बिरहण सामले तो पिव कारण जिव देय॥ ५ ॥
खिण मंदिर खिण आँगणे रे खिण खिण ठाड़ी होय।
घायल ज्यूँ घूमू फिरूँ म्हारी बिद्या न बूझे कोय॥ ६ ॥
काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे कागा तूँ ले जाय।
ज्याँ देसां म्हारो पिव बसे रे वाँ देख्याँ तूँ खाय॥ ७ ॥
म्हारे नातो नाम को रे और न नातो कोय।
मीरा व्याकुल बिरहणी प्रभु दरसण दीजो मोय॥ ८ ॥

(११०)

मंदिर जाती मीरा ने सांवरियो मिल गयो रे,
मोहन जादू कर गयो रे॥ टेर ॥
राणू मीरा ने बतलावे, के होग्यो थारे क्यूं न बतावे।
फीका पड़ ग्या नैण फरक बोली में पड़ गयो रे॥ १ ॥
राणू मीरा ने समझावे, बड़ा घरा की बात बतावे।
कुल के लागे दाग पती जीवत ड़ो मर गयो रे॥ २ ॥
मन मोहन है पती हमारो सारे जगको है रखवारो।
कहता राधेश्याम मीरा ने मोहन मिल गयो रे॥ ३ ॥

मीराँजीने समझावणी

(१११)

थांने बरज-बरज मैं हारी, भावज मानो बात हमारी॥ टेर ॥
मीराँजी थे चलो महल में, थाँने सौगन म्हारी।
कुल बहु राज घरानें की थे, आ काईं बात बिचारी॥ १ ॥
राणों रोष कियो थाँ ऊपर, साधाँ मे मत जारी।
कुल के दाग लगे छे भाभी, निन्दा होत अपारी॥ २ ॥
साधाँ रे सँग बन-बन भटको, लाज गमावो सारी।
बड़ा घराँ में जनम लिया थे, नाचो दे-दे तारी॥ ३ ॥
वर पायो हिंदवाणों सूरज, थे काँईं मनधारी।
भाभी मीराँ साध-संग तज चलो हमारी लारी॥ ४ ॥

मीराँजीको उत्तर

(११२)

उदाँबाई समझो सुघड़ सयानी, जगमें बात नहीं अब छानी॥ टेर ॥
साधू मात-पिता कुल मेरे, सजन सनेही ज्ञानी।
सन्त-चरण को लियो आसरो, सांच कहूँ यह बानी॥ १ ॥
राणाँ ने समझावो जावो, मैं तो बात न मानी।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, सन्तां हाथ बिकानी॥ २ ॥

निर्भयता

(११३)

म्हारे सिरपर सालिगराम राणोंजी म्हारो काईं करसी।
म्हारे सिरपै साँवरिया रो हाथ,
राणोंजी म्हारो काईं करसी॥ टेर ॥
राणूँ मीराँ ने यूँ कहे रे, सुण मीराँ म्हारी बात।
साधाँ री संगत छोड़ दे हे थाँरी सखियाँ सब सकुचात॥ १ ॥
मीराँ राणाँ ने यूँ कहे रे, सुण राणाँ म्हारी बात।
साधू तो माई बाप म्हारे, सखियाँ क्यूँ घबरात॥ २ ॥

जहर को प्यालो भेजियो रे, दी ज्यो मीराँ रे हाथ।
कर चरणांमृत पी गई मैं तो, भली करे दीनानाथ॥ ३ ॥
प्यालो तो मीराँ पी गई रे, बोली दोउ कर जोर।
थे तो मारण की करी म्हाँने राखण वालो है और॥ ४ ॥
राणूजी टांडो लादियो रे, हरिजी सूं नायँ पिछाण।
कुल तारण मीरां एकली रे, चाली तीरथ न्हाण॥ ५ ॥

उत्कण्ठा

(११४)

नींदड़ली नहिं आवे सारी रात।
अब किण बिध हो परभात॥ टेर ॥
सपने माहिं श्याम संग फूली, जागत चमक उठी सुध भूली।
(अब) चन्द्रकला न सोहात॥ १ ॥
तड़फ-तड़फ जिव जाय हमारो, पड़त न दृष्टी प्राण पियारो।
(म्हारी) सुध ल्यो दीनानाथ॥ २ ॥
कुण्ठित बुद्धि भई अब म्हारी, थाँ बिन म्हारा श्याम बिहारी।
(अब) लखे है कुण म्हारी बात॥ ३ ॥
'मीराँ' कहे बीति सोइ जाने, मन हठि पड़्यो सीख नहिं माने।
(अब) मरण जीवन हरि-हाथ॥ ४ ॥

विरह

(११५)

मैं जान्यो नाहीं हरि से मिलन कैसे होय॥ टेर ॥
आये मेरे सजना फिर गये अँगना, मैं अभागण रही सोय॥ १ ॥
फाड़ूँगी चीर करूँ गल कन्था, रहूँगी बैरागण होय॥ २ ॥
चुड़ियाँ फोड़ूँ माँग बखेरूँ, कजरा ने डारूँगी धोय॥ ३ ॥
निसि बासर मोहि बिरहा सतावे, कल ना पड़त पल मोय॥ ४ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुड़ो मति कोय॥ ५ ॥

(११६)

माई मैं तो लीन्हो गोबिन्दो मोल,
कोई कहे ओले कोई कहे छांने, लीन्हो बाजन्तां ढोल॥ १ ॥
कोई कहे मँहगो कोई कहे सस्तो, लीन्हो प्रेम के मोल॥ २ ॥
कोई कहे कालो, कोई कहे गोरो, लीन्हो घूँघट पट खोल॥ ३ ॥
कोई कहे घरमें कोई कहे बनमें, राधाके संग किलोल॥ ४ ॥
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, पुरब जनमरो कोल॥ ५ ॥

मीराँजीकी टेक

(११७)

राणांजी म्हारी रेख पूरबली म्हे काईं कराँ।
राणां जी म्हारी प्रीत पूरबली म्हे काईं कराँ॥ टेर॥
राम बिना नहीं आवड़े म्हारो हिवड़ो झोका खाय।
भोजनियाँ नहि भावे हो म्हांने नींदड़ली नहिं आय॥ १ ॥
विषका प्याला भेजिया थे, ले जाओ मीरां रे पास॥ बेगा.........
कर चरणाँमृत पी गई रे, गोबिन्द रे बिसवास॥ म्हारे० २॥
राठौडां री डीकरी रे आई सिसोद्यां री पोल॥ राणां........
थाँरी मारी ना मरूँ रे राखण वालो है और॥ म्हारो० ३॥
पेट्यां बासक भेजियो रे, कह फुलड़ाँ रो हार म्हाँने.......
खोल पिटारी देखियो जब, महलां भयो उजियार॥ म्हारे० ४॥
मैं तो दीवानी राम की रे, थाँरो म्हारो कांईं साथ॥ कोई.........
ले जाती बैकुन्ठ में रे, नेक न मानी बात॥ म्हारी० ५॥
मैं तो प्रभु चरणां री दासी, प्रभु गरीब निवाज॥ म्हारा.......
जन मीरां की राखज्यो हरि, बाँह गहे की लाज॥ राखो० ६॥

नित्य-साथी

(११८)

म्हारे जनम मरण रा साथी, थाँने नहिं बिसरूँ दिन राती॥ टेर॥
थाँ देख्याँ बिन कल ना पड़त है, जाणत मेरी छाती।
ऊँची चढ़ चढ़ पन्थ निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती॥ १ ॥

यो संसार सकल जग झूठो, झूठा कुल रा नाती।
दोउ कर जोड़्याँ अरज करूँ छूँ, सुन लीज्यो मेरी बाती॥ २ ॥
ओ मन मेरो बड़ो हरामी, ज्यों मद मातो हाथी।
सतगुरु हाथ धर्‌यो सिर ऊपर, अंकुस दे समझाती॥ ३ ॥
पल पल प्रभु को रूप निहारूँ निरख निरख सुख पाती।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल रँग राती॥ ४ ॥

कृष्ण-दर्शन-लालसा

(११९)

कुंजन वन छाँडी रे माधो, मेरी कौन गुनाह तकसीर॥ टेर ॥
जो मैं होती जल की मछलियाँ, तुम करते असनान,
चरण छुहि लेती रे माधो॥ १ ॥
जो मैं होती बन की कोयलियाँ, गैया चरावन जात,
बोल सुख देती रे माधो॥ २ ॥
जो मैं होती मौर की पंखियाँ, तुम करते शृंगार,
मुकुट चढ़ रहती रे माधो॥ ३ ॥
जो मैं होती बाँस बाँसुरियाँ, करती मुख पर वास,
अधर रस पीती रे माधो॥ ४ ॥
जो तुम चाहो मिलन हमारो, मीराँ के घनश्याम,
दरस बिन ब्याकुल रे माधो॥ ५ ॥

कृष्ण-दर्शन

(१२०)

आज मैं देख्या गिरधारी,
कौटिक मदन बदन की शोभा, चितवन अनियारी॥
बजावत बन्शी कुञ्जन में,
गावत ताल तरंग रंग धुनि, नाचत ग्वालन में॥
माधुरी मूरति वह प्यारी,
बसी रहे दिन रात हिये बिच टरत नहीं टारी॥

श्याम पर तन मन है वारी,
वह मोहनी मूरत निरखत ही सब लोक लाज डारी॥
तुलसि वन कुंजन संचारी,
गिरधरलाल नवल नट नागर, मीराँ बलिहारी॥

बड़े घर मैं सम्बन्ध

(१२१)

बड़े घर ताली लागी रे, मना थारी ऊणत भागी रे॥ टेर ॥
ताली लागी नामसूं रे, पड़ियो समँद में सीर।
मीठा मेवा त्याग के म्हारे, कुण पीवे कड़वो नीर॥ १ ॥
छीलरिये न्हाऊँ नहीं रे, समँदरिये कुण जाय।
न्हासां गंगा गोमती, म्हारे पाप सरीराँ रा जाय॥ २ ॥
काँच कथिर बिणजूं नहीं रे, लोहा मरे कुण भार।
सोना रुपा सूं काम नहीं रे, म्हारे हीराँ रो बोपार॥ ३ ॥
हाली-माली जाचूं नहीं रे, ना जाचूं सिरदार।
कामदाराँ सूं काम नहीं रे, मैं तो जाय मिलूं दरबार॥ ४ ॥
पींपा ने प्रभु परचो दीन्हो, दीन्हा खजाना पूर।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, धणीं म्हाँने मिलिया हजूर॥ ५ ॥

हरि-संग

(१२२)

मीराँ लाग्यो रंग हरी, और रंग सब अटक परी॥ टेर ॥
गिरधर गास्याँ सती न होस्याँ, मन बसिया बहुनामी।
जेठ बहू को नातो नाहीं, हम सेवक तुम स्वामी॥ १ ॥
चुड़लो म्हारे कण्ठी माला, साँच सील सिणगारो।
और कछू नहिं भावे हो म्हाँने, ओ गुरु-ज्ञान हमारो॥ २ ॥
कोई निन्दो कोई बन्दो, म्हे गोविन्द गुण गास्याँ।
जिण मारग म्हारा राम पधार्‌या, उण मारग म्हे जास्याँ॥ ३ ॥

चोरी न करस्याँ जीव न सतास्याँ के करसी म्हारो कोई।
गज सूं उतर म्हे खर नहिं चढ़स्याँ, उलटी बात न होई॥ ४ ॥
गिरधर धणीं कुटुम्बी गिरधर, मात-पिता सुत भाई।
थे थाँ रे म्हे म्हारे हो राणाँ, गावे मीराँबाई॥ ५ ॥

जूनो देवल

(१२३)

जूनो हुयो रे देवल जूनो हुयो।
म्हारो हँसलो तो नान्हों देवल जूनो हुयो॥ टेर॥
आ रे काया रे हँसला डोलन लागी रे।
पड़ गया दांत माँयलो साँचो रयो॥ म्हा० १॥
थाँरे तो म्हारे हंसा प्रीत पुराणी रे।
एकलड़ी छोड़ म्हाँने उड़ क्यूँ गयो॥ म्हा० २॥
बाई मीराँ के प्रभु गिरधर नागर
प्रेम को प्यालो प्रभुजी प्याऊँ पीवो॥ म्हा० ३॥

राम-नाम लेनेमें लज्जा

(१२४)

लोकड़ियाँ तो लाज मरेछे लेताँ हरिको नाम रे।
हरि मन्दिर जातां पग दूखे, भटके आखो गाम रे॥ टेर॥
परमारथ में पांव धरे तो, आवे बड़ी थकान रे।
राड़ झगड़ मैं दौड्या जावे, तज सगला घर काम रे॥ १ ॥
भाँड भँडैया गणिका नाचे, वहाँ जागे चहुँ जाम रे।
हरि चरचा में आलस लागे, आवे नींद निकाम रे॥ २ ॥
जगत कथा क्यूँ मीठी लागे, भगत कथा क्यूं खारी रे।
हरि बिन तेरो कूण सहाई, ज्यां दिन मचसी ध्यारी रे॥ ३ ॥
सगो सनेही एक साँवरो, अबिनाशी हरि राम रे।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल सुख धाम रे॥ ४ ॥

हरि-दर्शन-लालसा

(१२५)

आओ पधारो म्हारा साँवरिया, मीराँ भई रे बावरिया॥ टेर ॥
मनड़े रो मोर थाँरा दरशण खातर तरसे रे,
आँखड़ियाँ रा आँसू सावण भादवा ज्यूँ बरसे रे
टप्प टप्प पलकां सूं जल भरिया॥ १ ॥
घरका तो लोग मनें बावली बतावे रे,
सँग री सहेल्याँ म्हाँ पर आँगली उठावे रे,
हाँसी ऊड़ावे सारा टाबरिया॥ २ ॥
सारा सुख छोड्या मैं तो मोहन थांरे कारणैं,
भगवाँ सा भेष धार्या आई थांरे बारणें,
छोड्या पीहर ओर सासरिया॥ ३ ॥
चाहे जिनतों कष्ट देवे चाहे ज्यूँ परख ले,
तूँ है म्हारो एक बात गाँठ बाँध रख ले,
तूँ है मोहन मैं हूँ मोहनियाँ॥ ४ ॥

मीराँजीकी प्रार्थना

(१२६)

साँवरिया अरज मीरा की सुण रे।
मैं नुगरी म्हारो सुगरो साँवरियो अवगुण गारी रो कुण रे॥ टेर ॥
राणा विष का प्याला भेज्या चरणांमृत रो प्रण रे।
तारण वारो म्हारो श्याम धणी है मारण वारो कुण रे॥ १ ॥
निसदिन बैठी पंथ निहारूँ व्याकुल भयो म्हारो मन रे।
म्हारे तो मन में ऐसी आवे जाय बसूं माधोवन रे॥ २ ॥
निसदिन मोहे बिरह सतावे लकड़ी में लाग्यो घुण रे।
जैसे जल बिनु मछली तड़फे ऐसे ही म्हारो मन रे॥ ३ ॥
राम सभा म्हारो स्याम विराजे जा पै वारूँ तन मन रे।
मीरा कूँ प्रभु गिरधर मिलिया औराँ ने ध्यावे कुण रे॥ ४ ॥

(१२७)

पिया बिनु सूनो छे म्हारो देस॥ टेर॥
ऐसो है कोइ पीव मिलावे, तन मन वारौं सेस॥ १ ॥
तुमरे कारन बन बन डोलूँ, कर जोगन को भेस॥ २ ॥
प्रीतम प्यारा दरस दिखाओ, तुम बिनु बहुत कलेस॥ ३ ॥
अवधी बीती अजहुँ न आये, रूपा हो गया केस॥ ४ ॥
'मीराँ' के प्रभु कब रे मिलोगे, तज दियो नगर नरेस॥ ५ ॥

(१२८)

नाड़ी ना जाने बेद निपट अनाड़ी है॥ टेर॥
पीली पीली पान जैसी, पलँग पोढ़ाई एसी।
तुम घर जाओ बेदा, मेरे रोग भारी है॥ १ ॥
पीर तो कलेजे माहीं, मूरख टटोले बाहीं।
जबसे सिधारे श्याम, बिरह बान मारी है॥ २ ॥
जड़ी सब झूठी भई, कारी ना लागे कोई।
द्वारिका में बसे बेद, जासों मेरी यारी है॥ ३ ॥
'मीराँ' को जिवाई चाहो, श्याम तुम बेगा आवो।
रोग को कटैयो एक, कुब्ज को बिहारी है॥ ४ ॥

(१२९)

झुक आइ रे बदरियां सावन की। सावन की मन भावन की॥ टेर॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक पड़ी हरि आवन की॥ १ ॥
नान्ही नान्ही बूँदन मेहरा बरसे, दामिनि दमके झर लावन की॥ २ ॥
दादुर मौर पपिहरा बोले, कोयल सबद सुनावन की॥ ३ ॥
'मीराँ' के प्रभु गिरधर नागर आनँद मंगल गावन की॥ ४ ॥

(१३०)

तुम सुनो हो दयाल म्हारी अरजी॥ टेर॥
भव सागर में बही जात हूँ काढ़ो तो थाँरी मरजी॥ १ ॥
यो संसार सगो नहिं कोई सांचा सगा रघुवरजी॥ २ ॥
मात पिता अरु कुटुम कबीलो मतलब का सब गरजी॥ ३ ॥
मीरा की प्रभु अरजी सुनलो चरन लगाओ थाँरी मरजी॥ ४ ॥

(१३१)

हमरौ प्रनाम श्री बाँके बिहारी को॥ टेर॥
मोर मुकुट माथे तिलक विराजै, कुण्डल अलकन्ह कारी को॥ १ ॥
अधर मधुर सुर बंसी बजावे, रीझे रीझावे राधा प्यारी को॥ २ ॥
कटि पिताम्बर किंकिनि सोभित, जामो बन्यो जरि तारी को॥ ३ ॥
यह छबि निरखि मगन भइ 'मीराँ' मोहन गिरिवर धारीको॥ ४ ॥

काशी-विश्वनाथ

(१३२)

शिव के मन भाय रही काशी, शिव के मन॥ टेर॥
आधी काशी ब्राह्मण बनियाँ, आधी काशी संन्यासी।
काह करन को ब्राह्मण बनियाँ, काह करन को संन्यासी।
नेम धरम को ब्राह्मण बनियाँ, तप करने को संन्यासी।
कोन शिखर पर गौरि विराजे, कौन शिखर पर अविनाशी।
उत्तर शिखर पर गौरि विराजे, दक्षिण शिखर पर अविनाशी।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, हरि के चरण की मैं दासी।

प्रहलादजीकी पढ़ाई

(१३३)

म्हारा बाला! भव-सागर तरबो सहज छे॥ टेर॥
बोलो एक! एक! एक! सब घट महँ प्रभु को देख॥ म्हारा०॥
बोलो दोय! दोय! दोय! हरि बिना न दूजो कोय॥ म्हारा०॥
बोलो तीन! तीन! तीन! हो राम-भजन में लीन॥ म्हारा०॥
बोलो चार! चार! चार! हरि भजे सो उतरे पार॥ म्हारा०॥
बोलो पाँच! पाँच! पाँच! हरि भज्याँ न लागे आँच॥ म्हारा०॥
बोलो छै! छै! छै! तूँ गोविन्द, गोविन्द, कह॥ म्हारा०॥
बोलो सात! सात! सात! तज हरि बिन दूजी बात॥ म्हारा०॥
बोलो आठ! आठ! आठ! कर गीताजी को पाठ॥ म्हारा०॥

बोलो नौय! नौय! नौय! सब हरि की लीला होय॥ म्हारा०॥
बोलो दस! दस! दस! है हरी ही इक रस॥ म्हारा०॥

करमाँ बाइ रो खीच

(१३४)

थोड़ो आरोगो जी मदन गोपाल करमां बाई रो खीचड़लो॥ टेर॥
प्रभु जी थाँरो प्रेम पुजारी, गयो तीरथां न्हाण।
जातो-जातो दे गयो म्हांने, सेवा री भोलाण।
जद मैं आई थारे मंदिरिये में चाल॥ १॥
मैं हूं दीन अनाथणी जी, नहिं जाणूं पूजा-फन्द।
नयो नवादो झेलियो ओ, धन्धो गोकुलचन्द।
तूँ ही राखणियूँ भगतां री बाजी भाल॥ २॥
नहिं कर जानूं षटरस भोजन, खाटा सूँ अनुराग।
रूखो-सूखो राम-खीचड़ो, ग्वाँर फली रो साग।
मीठो दही ल्याई बाटकिये में घाल॥ ३॥
रूठ्या क्यूँ बैठ्या जी राधा, रुकमण जी रा श्याम।
भूखाँ मरतां बणे न सौदो मास-दिवस रो काम।
थांरा भूखां रा चिपजासी बाला गाल॥ ४॥
समझ गई सरमा गये ठाकुर, लखि गये नई नुवाद।
धाबलिये रो पड़दो कीन्हो, प्रगट लियो परसाद।
हरख्यो हिवड़ा में मन लहरी मोती लाल॥ ५॥

बातड़ियाँ

(१३५)

बातड़ियाँ जी बातड़ियाँ,
म्हारा सत्गुरू कही म्हाँने बातड़ियाँ॥ टेर॥
मिनखा जनम पदारथ पायो, सोय न सारी रातड़ियाँ।
छिनमें छूट जाय तन तेरो, फेर न आवे हाथड़ियाँ॥ १॥
जब लग हंस बसे काया में, हिल मिल होय सब साथड़ियाँ।
मनवो फिरे मिरग ज्यों भूल्यो, काल करे सिर घातड़ियाँ॥ २॥

मात पिता तिरिया सुत बन्धु, और कड़ूमो जातड़ियाँ।
अन्तकाल में कोई नहिं तेरो, जम कूटेला लातड़ियाँ॥ ३॥
शेष महेश सन्त सनकादिक, वेद पुराणां में गातड़ियाँ।
'जन जीया' भज राम सनेही, कर सतगुराँ जी री साथड़ियाँ॥ ४॥

परीक्षा

(१३६)

पारखी देख शकल पहिचान,
चेलो देख गुरु परखीजे, भगत देख भगवान॥ टेर॥
पत्ता देख पेड़ परखीजे, कपड़ो देख्याँ थान।
प्रजा देख राजा परखीजे, भूख देख जलपान॥
लीक देख सोनू परखीजे, गावत परखे तांन।
नैणाँ देख नेह परखीजे, बोल्याँ बचन जबान॥
तपत देख सूरज परखीजे, शबद सुण्या असमान।
गन्ध देख धरणी परखीजे, वस्तु देख्याँ खाँन॥
पुत्र देख मायत परखीजे, देख बानगी धाँन।
जगत देख जगदीश परखले, धार हिये बिच ज्ञान॥

श्रीगोविन्ददेवजीसे प्रार्थना

(१३७)

म्हारा गोविन्द देव, थाँने भूल्याँ नहीं सरे।
म्हारा गोविन्द देव, थाँ बिन म्हाँ रे नहीं सरे॥ टेर॥
जयपुर माहीं रया विराज, भगत उड़ीके दरशण काज।
मन्दिर माहीं उमड़े लोग, खूब लगावे लडुवन भोग॥ १॥
दरशन कर परिकम्मा देत, म्हाँसूँ घणों आप को हेत।
भारत भूमी राजस्थान, नर तन दियो म्हाँने अपनो जान॥ २॥
सत पुरूषाँ सूँ दिया मिलाय, जम की फाँसी दई छुटाय।
श्रीमुख प्रगट्या गीता ग्यान, सब कोई कर लो कल्याण॥ ३॥

दोउ कर जोड़ नवाऊँ सीस, भगती माँगूं बिसवा बीस।
जिन्ह भगती सूँ प्रगटो आप, वाही भगती द्यो माँ बाप॥ ४ ॥

(१३८)

हे जगन्नाथ भगवान कष्ट हरो म्हारो।
जल भीतर पकड़्यो ग्राह आज गज हार्‌यो॥ टेर॥
इक अर्ध रैणके समयमें कुञ्जर तिसायो।
दस हजार हथनी ले सरवर पर आयो॥
हथनी सब बाहर खड़ी भीतर गज धायो।
तब ग्राह बली ने अपनो जोर चलायो॥
जब खेंच लियो मझधार चले नहिं सारो॥ जल०॥ १॥
हथनी सब बाहर खड़ी वे बहुत पुकारी।
जलमें जाकर गजराज जुद्ध कियो भारी॥
वाके लिखी भाग्यमें विपति टरे नहिं टारी।
देखो दुखमाहीं त्रिया पतीसे न्यारी॥
हे दीनबंधु हरि आवो बेगि उबारो॥ जल०॥ २॥
जब सुणी भगतकी टेर झिझक हरि जागे।
लक्ष्मीजी जोड़े हाथ खड़ी प्रभु आगे॥
अस कहा भयो प्रभु कहो मोहि समझा के।
अब आधी रात भई जाओ सुसता के॥
घड़ी दोय करो आराम प्रभात सिधारो॥ जल०॥ ३॥
तब रमानाथ लक्ष्मी को यों समझावे।
मैं कैसे करूँ आराम भगत दुख पावे॥
म्हारो करुणासिन्धू नाम बेद में गावे।
म्हारे इसी नामके आज बटो लग जावे॥
म्हारो भगत लगे मोहि प्राणन से अति प्यारो॥ जल०॥ ४॥
प्रभु निज अरधंग्या तजी गवन हरि कीनो।
हो गये गरुड़ असवार गरुड़ तज दीनो॥
निज भक्तन के हित पाँव पयाँदे कीनो।
झट चक्रसुदर्शन फेंक ग्राहपर दीनो॥

प्रभु ग्राह मारकर गज को कियो निसतारो॥ जल०॥ ५॥
यह भक्त कथा महाभारत में परकासी।
कथ गावे रामरिखदास चुरू को बासी॥
कोइ पढ़े सुणे अरु गावे हरि पद पासी।
वाको फेर जनम नहिं होय धाम निज जासी॥
गज के मस्तक पर हाथ कृपानिधि धार्‌यो॥ जल०॥ ६॥

(१३९)

हर हर गंगा लहर तरंगा, दरशणसे होय पातक भंगा॥
गंगा मैया को नाम उचारूँ, सबही पापांरो भार उतारूँ॥
गंगा मैया का दरशण पाऊँ, पूजा करूँ वांने शीश नवाऊँ॥
गंगा के तट पर दीया जलाऊँ, गंगा मैया की आरति गाऊँ॥
गंगा मैया की रज्जी में लेटूँ, परमेश्वरसूं भुजा भर भेंटूँ॥
गंगा किनारे झूमत डोलूं, मैया मैया कहकर बोलूं॥
गंगा को जल पीउँ गंगा में न्हाऊँ, गंगा के जल सों भोजन पाऊँ॥
गंगा के घाट करूँ सतसंगा, पाउँ प्रभुजी की भगति अभंगा॥

(१४०)

गोपाल लाल म्हे तो थाँरी चरचा सुणबा आया हो,
म्हारा मदन गोपाल, प्यारा नन्दजी रा लाल,
भाग बडा भगताँ रा दरसण पाया हो, गोपाल॥ टेर॥
गोपाल लाल चोखा भूँडा जो कुछ हाँ म्हे तो थाँरा हो॥ म्हारा०॥
आप बिना म्हारे और न कोइ सहारा हो, गोपाल॥ १॥
गोपाल लाल थे छो म्हारे हिवड़े रा उजियारा हो॥ म्हारा०॥
पल पल छिन छिन लागो घणां थे प्यारा हो, गोपाल॥ २॥
गोपाल लाल थाँने छोड्याँ ठौड़ कठे नहिं म्हाने हो॥ म्हारा०॥
हाँ जिसड़ा म्हे तो पड़ग्या थाँरे पाने हो, गोपाल॥ ३॥
गोपाल लाल नित प्रति म्हाने संत समागम दीज्यो हो॥ म्हारा०॥
अपणाँ जाण शरण में म्हाँने लीज्यो हो गोपाल॥ ४॥

(१४१)

गोपाल लाल म्हे तो थाँरी गीता सुणबा आया हो,
बसुदेवजी रा लाल, म्हारा मदन गोपाल,
किरपा कर सतसंगत माहिं बुलाया हो, गोपाल॥ टेर॥
गोपाल लाल थे तो म्हाँने चोखा मिनख बणाया हो॥ बसु०॥
म्हे अभिमानी थाँने हीं बिसराया हो, गोपाल॥ १॥
गोपाल लाल म्हे तो थाँने दूर समझ भरमाया हो॥ बसु०॥
संत कृपा कर नेड़ा घणाँ बताया हो, गोपाल॥ २॥
गोपाल लाल गीता में थे गीत जिणाँ रा गाया हो॥ बसु०॥
उण भगताँ रा दरसण आप कराया हो, गोपाल॥ ३॥
गोपाल लाल आस जगत री करी घणाँ दुख पाया हो॥ बसु०॥
जननी ज्यूँ हिवड़े सूं आप लगाया हो, गोपाल॥ ४॥
गोपाल लाल राग द्वेष कर अगणित जनम बिताया हो॥ बसु०॥
बासुदेव सबही ने आप लखाया हो, गोपाल॥ ५॥

(१४२)

बिहारी लाल म्हे तो थाँरा दरसण करबा आया हो,
जसोमतीजी रा लाल म्हारा मदन गोपाल,
और आस तज सरण आपरी आया हो, गोपाल॥ टेर॥
बिहारी लाल थाँरी म्हारी जात नहीं है न्यारी हो॥ म्हारा०॥
फूल बिना तो सोहे नहिं फुलवारी हो, गोपाल॥ १॥
बिहारी लाल इतरा दिन थाँने सत चित आनँद मान्या हो॥ म्हारा०॥
थे तो म्हारा परम पिता अब जान्या हो, गोपाल॥ २॥
बिहारी लाल इतरा दिन थाँने तीन लोक पति मान्या हो॥ म्हारा०॥
थे तो म्हारा बन्धु सखा अब जान्या हो, गोपाल॥ ३॥
बिहारी लाल थाँ पर म्हारो हक पूरो ही लागे हो॥ म्हारा०॥
बालक मौज उडावे माता आगे हो, गोपाल॥ ४॥
बिहारी लाल थाँरा होय म्हे और कठे अब जावाँ हो॥ म्हारा०॥
थाँने हीं म्हे तो खोटी खरी सुणावाँ हो, गोपाल॥ ५॥

बिहारी लाल थाँरा ही टाबर थाँ देख्याँ दुख पावे हो॥ म्हारा०॥
देख दसा क्यूँ सरम न थाँनें आवे हो, गोपाल॥ ६॥
बिहारी लाल इतरा दिन थे, क्यूँ म्हाँने भटकाया हो॥ म्हारा०॥
दूर कर्‌या म्हाँने थे काईं सुख पाया हो, गोपाल॥ ७॥
बिहारी लाल अब तो म्हाँने छोड कठे मत जाज्यो हो॥ म्हारा०॥
गुनाह माफ कर हिवड़े आप लगाज्यो हो, गोपाल॥ ८॥

तर्ज—गणगौरकी

(१४३)

मैं तो ढूँढ्‌यो जग सारो, थाँसूं कोई नहीं न्यारो, देख्यो थाँरो ही उणियारो,
अब तो मोर मुकुट सिर धारो हो, गिरधर लुक छिप आप कठे जास्यो,
न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो॥ टेर॥
थाँने ओलख लीना आज, म्हारी सुनल्यो थे आवाज, क्यूँ भगतां सूँ रया भाज,
लुकताँ आवे नहीं लाज, अब थे नेड़ा म्हारे क्यूँ नहीं आवो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ १॥
ढूँढ्‌या धरणी आकास, थे तो बैठ्‌या म्हारे पास, प्रभु मैं तो थाँरो दास,
थे हो मालक म्हारा खास, थे तो मीठा मीठा बैण उचारो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ २॥
थाँने समझ लीना दूर, थे तो हाजर हजूर, थाँरो झलके छे नूर,
थाँरी किरपा है भरपूर, म्हारे हिवड़े निवास है थाँरो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ ३॥
नहीं आवड़ेलो थाँने, हरदम साथ राखो म्हाँने, बातां करस्याँ छानें छानें,
थे तो चौड़े करज्यो क्यांने, म्हारे एक आसरो थाँरो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो॥ ४॥
म्हारा आप छो अनादी, सब पड़पोतां री पड़दादी, म्हारी बिगड़ी बात बना दी,
म्हारी जिग्यासा जगा दी, म्हारी लालसा लगा दी, म्हाँने गीताजी रटा दी,
म्हारी चौरासी छूटा दी, साधन सामगरी जूटा दी, थाँरी पाई म्हे परसादी,
थे तो जन हित नर तन धारो हो गिरधर, लुक छिप आप कठे जास्यो,

न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो॥ ५ ॥
म्हाँपर किरपा कर दी नाथ, पायो प्रेमीजन रो साथ, म्हारे सिरपर थाँरो हात,
अब तो मिलस्याँ बाथूँ बाथ, थाँरो कीरतन लागे म्हाँने प्यारो हो गिरधर,
लुक छिप आप कठे जास्यो।
न्यारा म्हाँने छोड कठे जास्यो।
थाँ बिना घड़ी ए न आवड़े॥ ६ ॥

(१४४)

म्हारा मालक कृपानिधान, म्हारा स्वामी कृपानिधान।
किण बिध ध्यान करूँ प्रभु थाँरा, रूप अनेक महान॥ टेर॥
ऐसा थे बाजीगर बनग्या, जान न सके जहान।
प्रेमी भगत जमूरा थाँरा, ले थाँने पहचान॥ १ ॥
वकतां री थे वाणी बनग्या, श्रोतां रा सब कान।
नैणाँ री थे जोती बनग्या, प्राण्याँ रा सब प्रान॥ २ ॥
भगतां री थे भगती बनग्या, ग्यान्याँ रा थे ग्यान।
कवियाँ री थे कविता बनग्या, गावणियाँ री तान॥ ३ ॥
कलाकार सब कारीगराँ रा, गुनियाँ रा गुनवान।
चतुराँ री चतुराई बनग्या, विद्या रा विदवान॥ ४ ॥
धनवानां रा बडा धनी थे, सब रतनां री खान।
बलवानां रा बड़ा बली थे, जूझ मरे अनजान॥ ५ ॥
सब संपति रा थे भंडारी, छिप कर करो प्रदान।
लोग जगत रा अपनी माने, वृथा करे अभिमान॥ ६ ॥
थाँरा गुणाँ रो पार न पायो, थकग्या बेद पुरान।
हरदम म्हाँने मीठा लागो, देद्यो यो वरदान॥ ७ ॥

(१४५)

थे तो अगनित रूप बनाया जी, म्हारा भाग बडा हरि आया।
थे तो जगत रूप धर आया जी, म्हारा भाग बडा हरि आया।
थे तो पहर अनोखा बाना, धर लिया भेष थे नाना,

कर दरसण अति सुख पाया जी॥
थाँने सतसंगत सूँ पाया जी, म्हारा भाग बडा हरि आया॥ १ ॥
म्हे तो डींग मारता भटक्या, सत असत खोजमें अटक्या,
भगताँ री महर सूँ पाया जी॥ २ ॥
थे तो कामण गारा मोटा, बाबा नँदजी रा ढोटा,
थाँने जसोमति गोद खिलाया जी॥ ३ ॥
थाँने आवे घणाँ ही लटका, थे तो भेष धार लिया नटका,
थाँरी लीला देख लुभाया जी॥ ४ ॥
थाँने आवे घणाँ हीं चाला, सब जग मणिका थे माला,
थे तो घट घट माहिं रमाया जी॥ ५ ॥
थाँने आवे घणाँ हीं नखरा, थे तो हो नहिं किण रे बखरा,
म्हाँने विश्वरूप दरसाया जी॥ ६ ॥
थाँने आवे घणाँ हीं बाजा, थाँरा दिव्य जनम ओर काजा,
थाँरा छदम भेष मन भाया जी॥ ७ ॥
थाँरी अजब अलौकिक क्रीड़ा, हर लेवो भगतकी पीड़ा,
नहिं व्यापे थाँरी माया जी॥ ८ ॥
थाँरी अजब अलौकिक गीता, कोइ रया न थाँसू रीता,
सब आप हि आप लखाया जी॥ ९ ॥

(१४६)

म्हारो प्यारो प्रगट्यो आय, जगत में दरस रयो जी दरस रयो।
ओ तो अगनित रूप बनाय, जगत में दरस रयो जी दरस रयो॥ टेर॥
आपहि छोरा छोरी बनग्यो, सीरो पुरी कचोरी बनग्यो,
पापड़ फली मँगोड़ी बनग्यो, थाली गिलास कटोरी बनग्यो,
आपहि भोग लगाय॥ १ ॥
आप नदी ओर नाडी बनग्यो, गाय भैंस ओर पाडी बनग्यो,
आप बैल ओर गाडी बनग्यो, आपहि रयो चलाय॥ २ ॥
आपहि नाचे आपहि गावे, आप मजीरा ढ़ोल बजावे,
आपहि अपनो मरम जनावे, आपहि सुने सुनाय॥ ३ ॥

आप बाप दादाजी बनग्यो, आप बूढ़िया माजी बनग्यो,
आपहि बहन भुवाजी बनग्यो, और कठे सू ल्याय॥ ४ ॥
आप गुरूजी आपहि चेलो, आपहि न्यारो आपहि भेलो,
बनग्यो सब कुछ आप अकेलो, आपहि आप लखाय॥ ५ ॥

(१४७)

दरसण कर ली ज्यो जी, हरि की लीला है।
हियमहँ धरली ज्यो जी, हरि की लीला है॥ टेर ॥
या लीला रंग रँगीली है, कोइ लाल हरी कोइ पीली है,
या नित नव प्रेम रसीली है, कोमल निरमल चमकीली है,
धारण कर ली ज्यो जी, हरि की लीला है॥ १ ॥
कहुँ गंगाजीकी धारा है, कहुँ ऊँडा पानी खारा है,
कहुँ बिन चायाँ हीं बरसे है, कहुँ पानी खातर तरसे है,
घबराय मत जाज्यो जी, हरि की लीला है॥ २ ॥
कोइ जनम्या बटे बधाई है, कोइ मरग्या करे उठाई है,
कोइ हो रया ब्याह सगाई है, कोई लड़ रया लोग लुगाई है,
थे डर मत जाज्यो जी, हरि की लीला है॥ ३ ॥
कोइ धनवन्ता कोइ चपरासी, कोइ घरबारी कोइ संन्यासी,
कोइ तरक बाज कोइ बिसवासी, कोइ समझदार कोइ बकवासी,
झाँकी कर लीज्यो जी, हरि की लीला है॥ ४ ॥
कोइ खावे है कोइ पोवे है, कोइ सिसक सिसक कर रोवे है,
कोइ लम्बा पग कर सोवे है, कोइ टुक टुक बैठ्या जोवे है,
जोवत ही रहिज्यो जी, हरि की लीला है॥ ५ ॥
अब कितरी कहूँ कठे ताईं, कोइ माप तोल गिनती नाईं,
ऐ नाना रूप हरी का है, लीला बिन लागे फीका है,
चितमहँ धर लीज्यो जी, हरि की लीला है॥ ६ ॥

पहली देद्यो प्रेम थाँरो, प्रेमीजन रो संग।
सरणागत कर आपनो थे, राखल्यो श्रीरंग॥
थाँरा काईं लागे दाम॥ १ ॥
ध्यान जप में निष्ठा देद्यो, सुमिरूँ आठौं याम।
पूरी दैवी संपदा थे, कर द्यो म्हारे नाम॥
थाँरी लागे ना छदाम॥ २ ॥
ऊमड़तो सो प्रेम देद्यो, ऊबलतो वैराग।
भूलूँ जग सारो थाँमे, बढ़े अनुराग॥
रहे भाव निसकाम॥ ३ ॥
दृष्टि ऐसी देद्यो थाँने, देखूँ सब ठौर।
रहवूँ सदा चाकरी में, कहूँ कर जोर॥
निज पाऊँ बिसराम॥ ४ ॥

(१५०)

म्हारो प्रेम जगाओ जी, थाँरै चरन कमल रो चेरो॥ टेर॥
पड़्यो रहूँ दरबार आपरे, संतन मायँ बसेरो।
आठौं पहर चाकरी करसूं हरदम रहसूं नेरो॥ १ ॥
थाँने छोड कठे नहिं म्हारो ठौर ठिकानौं डेरो।
झिड़क बिडारो तो नहिं छोड़ूँ पकड़ लियो अब लेरो॥ २ ॥
ज्यों राखोला त्यों हीं रहसूं करौं न कोइ बखेरौ।
आप बिना कोई नहिं म्हारो सब जग मायँ अँधेरो॥ ३ ॥
थाँरो हूँ बस इतरो जाणू और नहीं कछु बेरो।
अपनौं जान शरन में राखो कृपा दृष्टि कर हेरो॥ ४ ॥

(१५१)

हर हर बैठ्या हरिजी रथ में आगे आय,
कुन्ती सुत सूं बातां हरि की होय रही॥ १ ॥
हर हर पकड़ी हरिजी घोड़लां री लगाम,
इक कर माहीं चाबुक धारण कर लीना॥ २ ॥

हर हर हाँकण लाग्या घोड़लां ने घनस्याम,
निज भगतां री आग्या पालण कर रया॥ ३ ॥
हर हर रोक्या रथ ने दोय सेना रे बीच,
भिषमपिता द्रोणांचारज रे सामने॥ ४ ॥
हर हर मोह भरी कायरता अरजुन केरि,
दुनियाँ रे हित परगट हरिजी कर रया॥ ५ ॥
हर हर पारथ प्यारा कुरु बंस्याँ ने जोय,
इतरी सी बाणी में जादू कर दीन्हा॥ ६ ॥
हर हर अरजुन रे मिस दीन्हो सबने ग्यान,
गीता रो अध्याय प्रथम हरि बरनीयो॥ ७ ॥

(१५२)

ए तो गायो हरि भगताँ रे काज, गीत प्रभु गायो रे॥ टेर॥
ए तो सास्त्र समंदर मथ लीनो, ए तो इमरत लियो है निकाल॥ १ ॥
ए तो पारथ रा सारथि बनिया, ए तो हिरदो दीनो खोल॥ २ ॥
ए तो गागर में सागर भरियो, ए तो घणां समर्थ सुजाण॥ ३ ॥
ए तो देख दसा कलजुगियाँ री, ए तो पिघल गया ततकाल॥ ४ ॥
म्हे तो स्वारथ में आँधा बनिया, ए तो ग्यान नेत्र दरसाय॥ ५ ॥
म्हे तो नासवान में सुख मान्यो, ए तो परमानंद लखाय॥ ६ ॥
म्हे तो भव सागर में डूब रया, ए तो लीना बाहर निकाल॥ ७ ॥
म्हे तो चौरासी लख भुगत रया, ए तो दीना मुकत कराय॥ ८ ॥
म्हे तो दल दल माहीं फँस रया, ए तो ऊँचा लिया उठाय॥ ९ ॥
म्हे तो भूखां मरता तड़फ रया, ए तो दीना तृपत कराय॥ १० ॥
म्हे तो लोभ फाँस गल बिच घाली, ए तो छिन में देई निकाल॥ ११ ॥
म्हे तो मोह की बेड़ी पहर लेई, ए तो छिन में दीनी काट॥ १२ ॥
म्हे तो ममता मैल लगाय लियो, ए तो भगती री गंगा नहलाय॥ १३ ॥
म्हे तो अहंकार में फूल रया, ए तो चूर चूर कियो डार॥ १४ ॥

म्हे तो विषयाँ रो बिष खाय लियो, ए तो प्रेम रो इमरत पाय॥ १५॥
म्हे तो राग द्वेष कर झगड़ रया, ए तो बासुदेव दरसाय॥ १६॥

(१५३)

करुणानिधान आपही, सब कष्ट भगतां रो हर्‌यो।
आयो सरण जो आपके, सब काज वाँरो ही सर्‌यो॥ टेर॥
प्रहलाद हित नरसिंघ बनिया, देख हिरनाकुस डर्‌यो।
बिन सस्त्र नख सूं चीर कर, मार्‌यो असुर कूँ निस्तर्‌यो॥ १॥
ध्रुव भक्त छाती सों लगायो, नेह जननी ज्यूँ झर्‌यो।
अँबरीष राख्यो चक्र सूं भयभीत दुरवासा फिर्‌यो॥ २॥
गज काज नंगे पाँव धाया, नाम आधो उच्चर्‌यो।
रच्छा विभीषण की करी, रावण हत्यो धरनी गिर्‌यो॥ ३॥
करुणा करी जब द्रोपदी तो, नीर नयणां सूँ ढर्‌यो।
थाक्यो दुसासन खेंच तन से, वस्त्र-तिलभर ना टर्‌यो॥ ४॥
राखी प्रतीग्या भीष्म की प्रभु, आपरो प्रण बीसर्‌यो।
रच्छा करी सब पाँडवाँरी, कौरवाँ रो बध कर्‌यो॥ ५॥
सेना भगत रे कारणे प्रभु, भेष नाई को धर्‌यो।
बण सेठ साँवलसाह हरिजी, भात नरसी रो भर्‌यो॥ ६॥
भयभीत हो जो आप के, आयो सरण सोई तर्‌यो।
अब जेज किण बिध हो रही, प्रभु दास चरनन में पर्‌यो॥ ७॥

(१५४)

अगम देसां सूं जोगी जी आया, आकर दीन हेला हो।
जाग जाग उठ हरि भज प्राणी, सोवण की नहिं वेला हो॥ टेर॥
जिण देही का गरब करे तूँ, बण ठण होरयो छेला हो।
बिखर जावतां बार न लागे, बालू का ज्यूँ ढेला हो॥ १॥
बेटा बहू घर नाती रे गोती, संपति कुटुम कबीला हो।
ना कोइ किण रे संग चल्या है, जावेला आप अकेला हो॥ २॥
इण जग की है रीत पुराणी, थिर नहिं कोइ रहेला हो।
चार दिनांरी चमक दमक है, तीरथ का सा मेला हो॥ ३॥

तरवर केरा पान ज्यूं टूटे, रह न सके कोइ भेला हो।
जाय कठे ही दूर सिधावे, लागे पवनका झेला हो॥ ४॥
हरि का सुमिरण सेवा जग की, ए दोउ संग चलेला हो।
धन्य हो जोगी मोकूं जगाया, आप गुरू हम चेला हो॥ ५॥

(१५५)

कुलवंती बहना नवधा भगती रा गहणाँ पहरल्यो॥ टेर॥
कथा श्रवण काना रा झूमर, हरि किरतन रो हार।
सुमिरन मूरति स्याम सुंदर की, पहरो हियमहँ धार हे॥ १॥
पद सेवा की पहुँची पहरों, पहुँचों प्रभु के द्वार।
अरचन आँगलियाँ री मुदरी, जतन जड़ाऊदार हे॥ २॥
बंदन बोर सीस धर राखो, हरि चरणां में डार।
नक बेसर हरि नाम उचारो, उतरो भव सूं पार हे॥ ३॥
दुलड़ी दासी भाव सूं हरि सेवा में हरबार।
सखी भाव का भुजबँद पहरो, प्रगटो हिय उदगार हे॥ ४॥
कटि किंकिणी करो व्रत पालन, हरि ही राखण हार।
नूपुर रह एकांत निकट प्रभु, नाचो ले करतार हे॥ ५॥
आत्म निवेदन अंग अंग सजि, बिनवो बारंबार।
मैं तो कुछ जाणू नहिं प्रभुजी, लीजो आप सँभार हे॥ ६॥

(१५६)

गउ हत्यारा पापीड़ाँने बोट मत दीज्यो जी, सजन थे सुणज्यो जी॥
गउ हत्यारा पापीड़ाँने बोट मत दीज्यो जी, बहना सुणज्यो जी॥ टेर॥
बातांमें बहकावे थाँने, तनक न थे बहकीज्यो जी।
नरकां माहीं जावण री त्यार्‌याँ मत कीज्यो जी॥ १॥
चप्पल जूता चमड़े रा थे, पग में मत पहरीज्यो जी।
सूटकेस बिस्तर चमड़े रा, छुह मत लीज्यो जी॥ २॥
चूल्हे पर ली पहली रोटी, गउ माता ने दीज्यो जी।
गउ माता ने नित उठ थे परणाम करीज्यो जी॥ ३॥

दूध दही अरु घिरत गाय रो, घर माहीं बरतीज्यो जी।
बेजीटेबल नकली घी सूँ दूर रहीज्यो जी॥ ४ ॥
गोबर अरु माटी सूं घरमें आँगण चौक पुरीज्यो जी।
गऊ लोकमें बास करो हरि दरसण कीज्यो जी॥ ५ ॥

(१५७)

कुबुद्धि ने छोडो रे भाई,
लख चौरासी फिरतां फिरतां मिनखा देह पाई॥ टेर ॥
हीरा जनम अमोलक खोया दिया तोहि साईं।
काम क्रोध ने मार हटाओ, नारायण ध्याई॥ १ ॥
हरि भजता हिरणाकुस बरजे, ऐसो अन्याई।
खंभ फाड़ प्रहलाद उबार्‌यो, आँतां बिखराई॥ २ ॥
ध्रुवजी ध्यान लगायो वन में, बालापन माँईं।
भक्तन को सरदार बनायो, वैकुण्ठाँ जाई॥ ३ ॥
जब गजराज गयो जल भीतर, हरि हरि उचराई।
गरुड़ छोड़ आतुर हो धाया, ऐसा रघुराई॥ ४ ॥
मंदोदरि रावणने बरजे, सीता मत लाई।
समँदर ऊपर सेतू बाँध्यो, अब तूँ कहँ जाई॥ ५ ॥
सिसुपालो तो जान तनावे, बरजे भौजाई।
रुकमणि ने तो कृष्ण ले गयो, रथ में बैठाई॥ ६ ॥
कंस राज जब बैर बढ़ायो, कृष्ण कुँअर ताईं।
पकड़ केस धरणीं पर डार्‌यो, दाँतुन की नाईं॥ ७ ॥
जो कुबुद्धि ने छोड हरी के चरनन चित लाई।
गेनो भगत कहे परमेस्वर रीझे पल माईं॥ ८ ॥

(१५८)

सुण सेठाणी हे गायाँ ने दे दे चारो पाणी हे॥ टेर ॥
जोड़ जोड़ धन भेलो कीन्हो, बेटां पोतां ताणी हे।
मरसी जद वे राख उडासी, बीना छाणी हे॥ १ ॥
चोखा चोखा करम करे तो, संत कहे तूँ स्याणी हे।
किण रे संग में चली नहीं है, कौड़ी काणी हे॥ २ ॥
भूल गई तिरलोक नाथ ने, बण बैठी तूँ राणी हे।
रट ले अब तो राम नाम थोड़ी जिंदगाणी हे॥ ३ ॥

सतसँग सुमिरण सेवा कर ले, मत कर आनाकानी हे।
दान कर्‌याँ धन नाँय घटे संतारी बाणी हे॥ ४ ॥

(१५९)

धरणी ने क्यूँ बोझाँ मारी, रे बंदा तूँ तो हरिजीकी भगति बिसारी॥ टेर ॥
गरभ वास में भगति कबूली, संकट काटो गिरधारी॥ १ ॥
बाहर आकर भूल गयो तूँ, नकटाई क्यूँ धारी॥ २ ॥
जिण देही ने देवता तरसत, वाही खाख कर डारी॥ ३ ॥
खायो पियो नींद भर सोयो, कंचन काया बिगारी॥ ४ ॥
नौ दस मास जननि दुख पाई, बाँझ न रही बिचारी॥ ५ ॥
बार बार तोहे कह समझायो, जीती बाजी हारी॥ ६ ॥
बंसीदास शरण महँ आयो, रच्छा करो मुरारी॥ ७ ॥

(१६०)

सन्तो कुण आवे छे कुण जाय बोले छे जाकी खबर करो॥ टेर ॥
पानी केरो बुलबुलो रे धर्‌यो आदमी नाम।
कौल कियो हरि भजनको रे, आय बसाय लियो गाँव॥ १ ॥
हस्थी छूट्यो ठाण से रे, लसकर पड़ी पुकार।
दसुँ दरवाजा बन्द किया रे, निकल गयो है असवार॥ २ ॥
जैसे पानी ओस को रे, वैसो यो संसार।
झिलमिल झिलमिल हो रही रे, जात लगावे नहीं बार॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो, झूठो जग व्यवहार।
राम नाम की नाव बैठ के, उत्तर चलोनी परले पार॥ ४ ॥

(१६१)

म्हारा सतगुरु देई है बताय दलाली हीरा लालन की॥ टेर ॥
लाल लाल सब कोई कहे रे, सबके पल्ले लाल।
गाँठ खोल देखे नहीं रे, ताही ते फिरे है कंगाल॥ १ ॥
लाल पड़ी चौगान में रे, कीच पड़ी लपटाय।
मूरख ठौकर दे चल्यो रे, साधूजन लेई है उठाय॥ २ ॥
सत गुरु ऐसा कीजिये रे, ज्यूँ महँदी का पात।
लाली वाके भीतर माहीं, हरियल है वाकी जात॥ ३ ॥

सतगुरु ऐसा कीजिये रे, ज्यूँ लोहा बिच आग।
लाली वाके भीतर माही, चकमक होय कर लाग॥ ४ ॥
सार झड़े लोहा झड़े रे, झड़ झड़ पड़े सरीर।
'रामानँद' का बालका रे, कहवे है दास 'कबीर'॥ ५ ॥

(१६२)

सखी इण आँगणिये में हे।
कइ खेल्या कइ खेलसी कइ खेल सिधाया हे॥ टेर ॥
आवो पाँच सहेलड्याँ, मेरा सींवो चोला हे।
मैं अबला भइ बिरहणी, मेरा साहिब भोला हे॥ १ ॥
बड़ तल आण उतारिया, साथी कुरलाया हे।
तुम सब अपने घर चलों, हम भया पराया हे॥ २ ॥
काजी महमद यूँ भणे अब यहाँ न रहणा जी।
आया सँदेसा राम का अब कछु नहिं कहणा जी॥ ३ ॥

(१६३)

संसारिया में नथी आवनो पाछो॥ टेर॥
चुन चुन कंकर महल चिनाया, काया गढ़ छे काचो॥ १ ॥
काया नगरी में बाग लगायो, हँसला लेत वासो॥ २ ॥
सतसँग सुमिरन सेवा कर ले, सँग ना चले मासो॥ ३ ॥
'मीराँ' कहे प्रभु गिरधर नागर, साँवरो सनेही साँचो॥ ४ ॥

(१६४)

म्हाँने पार उतारो जी, थाँने निज भगतां री आण॥ टेर ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह में, भूल्यो पद निरबान।
बह्यो जात हूँ भवसागर में, तारो श्याम सुजान॥ १ ॥
लख चौरासी भरमत भरमत, मोड़ी पड़ी पिछाण।
अब तो शरण पड़्यो चरणांरी, मत दीज्यो थे जाण॥ २ ॥
मैं तो कुटिल अधम अपराधी, भज्यो नहीं भगवान।
कह नरसी तुम पतित उधारन, गावत बेद पुरान॥ ३ ॥

(१६५)

राम कृष्ण उठि कहिये भोर॥ टेर॥
यह अवधेश वह ब्रज जीवन, यह धनुधर वह माखन चोर॥ १ ॥
इनके चमर छत्र सिर सोहे, उनके लकुट मुकुट कर जोर॥ २ ॥
इन सँग भरत शत्रुहन लक्ष्मन, बलदाऊ सँग नंदकिशोर॥ ३ ॥
इन सँग जनक लली अति सोहे, उत राधा सँग करत किलोल॥ ४ ॥
इन सागरमें शिला तिराई, उन गोवर्धन नख की कोर॥ ५ ॥
इन मार्‌यो लंकापति रावन, उन मार्‌यो कंसा वर जोर॥ ६ ॥
तुलसिदास के ये दोउ जीवन, दशरथ सुत अरु नंदकिशोर॥ ७ ॥

(१६६)

कर दे दीनों का दुख दूर हो, बाघंबर वाले॥ टेर ॥
कोई चढ़ावे थाँरै जल की धारा, कोई चढ़ावे काचो दूध॥ १ ॥
कोई चढ़ावे हरी बेल की पतिया, कोई चढ़ावे फल फूल॥ २ ॥
कोई चढ़ावे थाँरै आक धतूरा, भाँग चढ़ावे भरपूर॥ ३ ॥
नंदीगण की सोहे सवारी, हाथों में सोहे है त्रिशूल॥ ४ ॥
दास नारायण शरण तिहारी, अरज करोनी मंजूर॥ ५ ॥

(१६७)

जो दिन जाय भजन के लेखे, सो दिन आसी गिनती में॥ टेर ॥
गयो बालपन आयो बुढ़ापो, जोबन जासी झिलकी में॥ १ ॥
हीरा कंचन मानिक मोती, धर्‌या रहेला धरती में॥ २ ॥
खाय ले पिय ले और खरच ले, पुण्य धर्म परवरती में॥ ३ ॥
राजा भोज करण से जोधा, वे भी आया मरती में॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाइ साधो अमर नहीं इण पिरथी में॥ ५ ॥

(१६८)

म्हाँने रामजी सदा वर दीज्यो हे माय, अमरापुर में सासरो।
म्हाँने इण जुग में मत राखो हे माय, किसो भरोसो इण सास रो॥ टेर ॥
मैं तो अयानी धीवड़ नानी, म्हारी माता बड़ी विधाता हे माय॥ १ ॥

बाबल ग्यानी सब बिध जानी, एजी वे तो चार पदारथ दाता हे माय॥ २ ॥
चँवरी माँडी कदे न राँडी, एजी म्हारो सतगुरु लगन लिखायो हे माय॥ ३ ॥
सदा सपूती कदे न ऊती, एजी मैं तो सबद पुत्र भल पायो हे माय॥ ४ ॥
सदा सुहागण कदे न दुहागण, एजी मैं तो अजर अमर बर पायो हे माय॥ ५ ॥
रामादासा चरण निवासा, एजी वेतो द्याल वाल जस गायो हे माय॥ ६ ॥

(१६९)

कयो हे ना जाय सखी हे म्हाँसू रयो हे ना जाय।
बालमुकुँद को रूप सखी हे म्हाँसू कयो हे ना जाय॥ टेर ॥
मोर मुकुट सिर चन्द्रिका वांके तिलक सोहे भाल।
कुँडल झलकत कान माहीं चपल नैण विशाल।
धनुष सा बाँका भँवारा लियो चित्त चुराय॥ १ ॥
अलक घुंघरारी भ्रमर सी ललित गोल कपोल।
अधर पर लाली लसत नासा मणी अनमोल।
चिबुक पर ज्यूँ दामणी दमकत भई थिर आय॥ २ ॥
नील मणि ज्यूँ अंग चमकत कंठ मुकता माल।
बाँसुरी कर लियाँ शोभित चलत मधुरी चाल।
ऊजली सी दाँत बतीसी रयो अति मुसकाय॥ ३ ॥
पीत अंबर कमर कसियो दुपट्टो जरिदार।
मेखला भुजबन्द कंकण नुपुर की झणकार।
चित्त चढ़्यो हिय में बस्यो नैनन में रयो समाय॥ ४ ॥

(१७०)

थे तो लुकग्या कठे जी म्हारा श्याम, म्हे तो थाँने ढूँढ थक्या।
थे तो छिपग्या कठे जी म्हारा श्याम, म्हे तो थाँने ढूँढ़ थक्या॥ टेर ॥
कोई निरगुण सगुण बतावे, निराकार साकार।
कोई कहे दोय भुज थांरे, कोई बतावे भुजा चार॥ १ ॥
कोई जीव प्रकृति ईश्वर महँ, बरण्या भेद अनेक।
कोई कहे जगत सब झूठो, सांचो तो ब्रह्म है एक॥ २ ॥
कोई कहे बैकुण्ठ में थे, रहवो रमानिवास।
कोई कहे खीर सागर में, रहवो जठे है थाँरो वास॥ ३ ॥

कोई कहे दशरथ का बेटा, कोई कहे नँदलाल।
कोई कहे म्हारे तो घर में, छोटा सा लड्डू गोपाल॥ ४ ॥
महापुरुष किरपा कर म्हारो, मेट्यो भ्रम संताप।
अब तो सबही ठौड़ म्हाँने, दरश रया छो प्रभु आप॥
अब ही थाँने ढूँढ़ सक्या॥ ५ ॥
थे तो मोड़ा मिलिया जी म्हारा श्याम, अब ही थाँने ढूँढ़ सक्या॥

(१७१)

देखूं थाँने कवन दिसा में जाय,
थे व्यापक सबमें होरया जी म्हारा श्याम।
परिपूरण सबमें होरया जी म्हारा श्याम॥ टेर ॥
अगन पवन जल धरणी ओर आकाश,
थे दसहु दिशा में छारया जी म्हारा श्याम॥ १ ॥
नर नारी पशु पच्छी कीट पतंग,
सब भेष रमापति धारिया जी म्हारा श्याम॥ २ ॥
परबत जंगल बिरछन रा सब पात,
जामे दरशे छबि आपकी जी म्हारा श्याम॥ ३ ॥
कल कल बहवे गंगाजी की धार,
थाँरा ही शबद सुहावणा जी म्हारा श्याम॥ ४ ॥
मिट गइ अब तो भोग मोक्ष की चाह,
घट घट में निरखूँ आपने जी म्हारा श्याम॥ ५ ॥

(१७२)

जठे देखूँ बठे ही म्हारा रामजी रे, राखूँ काहेसूँ बैर बिरोध॥ टेर ॥
म्हाँने प्रेमी भगत हरिका लाडला रे, दीन्हो गीता रो दुरलभ ग्यान॥ १ ॥
मनड़े री गती थिर हो गई रे, हरि की रूप माधुरी जोय॥ २ ॥
हरियाली लसत हरि रूपकी रे, रहि दसहु दिसा महँ छाय॥ ३ ॥
अब तो माया ब्रह्म अरु जीवमें रे, दरसे कछु भी नहिं भेद॥ ४ ॥
मिट गई मलिन सब वासना रे, भयो राग द्वेष को नास॥ ५ ॥
सब पापाँ रा उडग्या छूँतरा रे, होयो करमाँ रो चकनाचूर॥ ६ ॥
माथाफोड़ी करत जुग बीतग्या रे, पायो पायो परम बिसराम॥ ७ ॥

(१७३)

कैसी रचना रची म्हारा स्वामी, वाहवा जी वाहवा।
नाना रूप धर्‌या बहु नामी, वाहवा जी वाहवा॥ टेर॥
आप पुरुष अरु आपहि नारी, वाहवा जी वाहवा।
आप देवता आप पूजारी, वाहवा जी वाहवा॥ १॥
आपहि पवन अगन जल धरनी, वाहवा जी वाहवा।
आपहि की सब अदभुत करनी, वाहवा जी वाहवा॥ २॥
आपहि चाँद सूरज नभ तारा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि का सब जगत पसारा, वाहवा जी वाहवा॥ ३॥
आपहि पशु खग कीट पतंगा, वाहवा जी वाहवा।
भाँत विचित्र बन्या बहु रंगा, वाहवा जी वाहवा॥ ४॥
आपहि वृक्ष फूल फल शाखा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि मास बरष दिन पाखा, वाहवा जी वाहवा॥ ५॥
आपहि निर्गुण ब्रह्म परेसा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि ब्रह्मा विष्णु महेसा, वाहवा जी वाहवा॥ ६॥
नमो नमो प्रभु अंतरजामी, वाहवा जी वाहवा।
आपहि मात पिता गुरु स्वामी, वाहवा जी वाहवा॥ ७॥
ऐसा मरम बतावन हारा, वाहवा जी वाहवा।
आपहि केवल आपका प्यारा, वाहवा जी वाहवा॥ ८॥
करऊँ आपकी किण बिध पूजा, वाहवा जी वाहवा।
आप बिना कोई और न दूजा, वाहवा जी वाहवा॥ ९॥

(१७४)

हरिने भजनां अज्यूं किसीकी, लाज न जाती जाणी हो।
हरि भगतां री सदा विजय छे, आ संतांकी वाणी हो॥ टेर॥
भक्त प्रहलाद की रक्षा कीनी, हिरणाकुश ने मार्‌यो हो।
लंकापती विभीषण कीनो, रावण ने संहार्‌यो हो॥ १॥
नानीबाइ को भर्‌यो माहेरो, नरसी रो दुख हर लीनो हो।
ध्रुवजीने प्रभु दरसण दीना, राज अचल कर दीनो हो॥ २॥

विष को प्यालो हँस हँस पी गई, राखी मीराँबाई हो।
द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो, पाँडवाँ री करी सहाई हो॥ ३॥
मनसा पूरी अंबरीष की, शाप ताप दुख झेल्या हो।
भगतां रे हित परमधाम तज, मृत्युलोक में खेल्या हो॥ ४॥
परतीग्या हरिचंद की राखी, गज को फंद छुटायो हो।
तुलसी सूरा दास कबीरा, अरजुन मोह मिटायो हो॥ ५॥
मोटो लाहो हरी भजन को, जे कोइ सुमिरण करसी हो।
प्रेमलदास कहे कर जोड़्याँ, हरि सारा दुख हरसी हो॥ ६॥

(१७५)

कद भजसी तूँ रघुराय, थारी बीति उमरियाँ जाय॥ टेर॥
भोगां सूं मन भरतो भरतो, पापाँ मे पग धरतो धरतो,
तूँ आज काल करतो करतो, दियो हिरोसो जनम गमाय॥ १॥
तूँ आयो जनम सुधारणने, हरि चरणकमल चित धारणने,
अब माया लग्यो सँवारणने, कब आँख बंद हो जाय॥ २॥
तूँ गरभवास में दुख पायो, हरि हरि पुकार कर चिरलायो,
बाहर काढ़ो भगती करस्यूँ, तूँ दियो कवल बिसराय॥ ३॥
तूँ माया मद में चूर रयो, धन जोबन में भरपूर रयो,
सतसँग सूं डरतो दूर रयो, खो दियो जमारो हाय॥ ४॥
तूँ गीता पढ़े न रामायण, तूँ पूजा करे न पारायण,
तूँ बिषयन में दतचित रहवे, तनें देख जीव घबराय॥ ५॥
कब समय जोग सूं कथा सुणे, घर आकर माया जाल बुणे,
तूँ बादशाहके बकरे ज्यूँ, रयो हरि हरि दूब चबाय॥ ६॥

(१७६)

हरि भज ले रे बंदा रामने सुमिर ले, जब लग घटमहँ प्राण रे॥ १॥
किरपा कर प्रभु नर तन दीनो, सेवा कर निसकाम रे॥ २॥
दाँत दिया रे बंदा अन्नकुट लेवण, जीभ देई रट नाम रे॥ ३॥
नैण दिया रे बंदा हरि दरसण को, कान दिया सुण ग्यान रे॥ ४॥
पाँव दिया रे बंदा तीरथ करबा, हात दिया कर दान रे॥ ५॥
सीस दियो रे बंदा सीस झुकावण, कर प्रभुजीने परणाम रे॥ ६॥